स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कोल इंडिया
Coal India

अंक - 33, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2020

कोयला भारती

बीसीसीएल की गृह पत्रिका

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

एक मिनीरत्न कंपनी

(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)

कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005

Digital India
Power To Empower

स्वागतम्

श्री गोपाल सिंह
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

श्री गोपाल सिंह ने 1 सितंबर, 2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है। महोदय बीसीसीएल परिवार में आपका हार्दिक स्वागत है।

श्री सिंह ने वर्ष 1981 में प्रतिष्ठित इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद से स्नातक किया और सीसीएल के रजरप्पा क्षेत्र से खनन अभियंता के रूप में अपने पेशेवर कैरियर की शुरुआत की। आपने ओपनकास्ट खनन में एम. टेक किया है और मानव संसाधन प्रबंधन में विशेषज्ञता के साथ एमबीए की डिग्री भी प्राप्त की है।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद को सुशोभित करने से पहले अपने व्यापक सेवाकाल के दौरान आपने कोल इंडिया की विभिन्न अनुषंगी कंपनियों में काफी लंबे समय तक अपनी कुशल सेवाएं दी हैं। सर्वाधिक समय तक आप सीसीएल रांची में रहे हैं जहां आपने विभिन्न प्रबंधकीय पदों पर कार्य करते हुए 8 वर्ष से भी अधिक समय तक कंपनी के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद की जिम्मेदारी कुशलता पूर्वक निभायी है। इसके अलावा आप एसईसीएल बिलासपुर में निदेशक (तकनीकी) के पद पर भी रहे हैं और आपके कार्यकाल के दौरान ही कंपनी को मिनीरत्न कंपनी का दर्जा मिला। सीसीएल, रांची में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के आपके कार्यकाल के दौरान पहले भी दो बार आप को बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के अतिरिक्त प्रभार की जिम्मेदारी सौंपी जा चुकी है।

कोयला उद्योग में अपने कार्यकाल के दौरान कंपनी को उच्च लाभप्रदता में पहुंचाने तथा दुर्लभ संसाधनों के रणनीतिक व समुचित उपयोग और प्रबंधन के प्रति आपके बहुमूल्य योगदान के लिए कंपनी के साथ-साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भी आपको कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। आप आईईआई, एमजीएमआई, आईएमईजे जैसे विभिन्न व्यावसायिक निकायों से भी जुड़े हैं। वर्ष 1998 में कोलंबो योजना के तहत आपने जापान में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और एसईसीएल में अपने सेवाकाल के दौरान खनन गतिविधियों के तकनीकी अध्ययन के लिए चीन, अमेरिका और ब्रिटेन में वरिष्ठ प्रबंधन टीम का नेतृत्व भी किया है।

यह आपके व्यापक तकनीकी एवं प्रबंधकीय अनुभव का ही परिणाम है कि भारत सरकार द्वारा आपको एक बार पुनः कोकिंग कोल उत्पादन के क्षेत्र की अग्रणी कंपनी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के पद की जिम्मेदारी सौंपी है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में कंपनी उन्नति करेगी और निरंतर आगे बढ़ेगी।

श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

श्री पी वी के आर मल्लिकार्जुन राव ने 01.06.2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) का पदभार ग्रहण किया है। महोदय बीसीसीएल परिवार में आपका हार्दिक स्वागत है।

श्री राव ने वर्ष 1982 में आंध्र विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक किया है और वर्ष 1986 में नागपुर विश्वविद्यालय से कार्मिक प्रबंधन और औद्योगिक संबंधों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। वर्ष 1987 में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड में कल्याण अधिकारी (प्रशिक्षु) के रूप में अपनी सेवा की शुरुआत के साथ आप कोल इंडिया लिमिटेड परिवार में शामिल हुए। आपने कोल इंडिया लिमिटेड की विभिन्न अनुषंगी कंपनियों में अलग-अलग पदों पर कार्य करते हुए कोयला उद्योग को समृद्ध किया है।

बीसीसीएल में निदेशक (कार्मिक) के रूप में अपनी सेवाएं आरंभ करने से पहले आप कोल इंडिया लिमिटेड मुख्यालय, कोलकाता में महाप्रबंधक (कार्मिक) के पद पर भर्ती और नीतिगत मामलों के प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे।

आपके अनुभव, ज्ञान और कार्यकुशलता को देखते हुए भारत सरकार द्वारा आपको भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) के महत्त्वपूर्ण पद की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। आपकी प्रबंधकीय क्षमता और व्यापक जानकारी से निश्चित ही कंपनी लाभान्वित होगी।

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साथियो,

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका 'कोयला भारती' के अंक-33 के माध्यम से आपके साथ अपने विचार साझा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली यह पत्रिका भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार अपेक्षित है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थित कार्यालय अपना संपूर्ण पत्राचार हिंदी में अवश्य करें। दरअसल हिंदी की सहजता, सरलता और व्यापकता के कारण ही संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।

संविधान लागू होने के 70 वर्ष बीत जाने के बाद भी अभी हम शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी में नहीं कर पा रहे हैं। कार्यालय का संपूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए हमें अपना कार्य मूल रूप से हिंदी में करने से शुरुआत करनी होगी। यदि हम पहले अंग्रेजी में फिर उसका अनुवाद हिंदी में करवाकर राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य करते रहेंगे, तो हम शत प्रतिशत कार्य हिंदी में करने की दिशा में कभी सफल नहीं होंगे। अनुवाद सहायक मात्र होना चाहिए, यदि हम इसे साध्य बना लेंगे, तो मूल रूप से हिंदी में काम करने की शुरुआत कभी नहीं हो पायेगी। राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। इसी नीति का अनुपालन करते हुए मूल रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित किया जाता है।

सरकारी नौकरियों में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के महत्त्व को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए हाल ही में राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी के गठन को मंजूरी देकर एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। इसके अंतर्गत हिंदी व अंग्रेजी के अतिरिक्त देश की 12 अन्य भाषाओं में इस परीक्षा का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। भविष्य में संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज सभी भाषाओं को इसमें सम्मिलित किये जाने की योजना है। इसके साथ ही हाल ही में जारी नई शिक्षा नीति – 2020 में शिक्षा प्रणाली में मातृभाषाओं के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी महत्त्व दिया गया है। ये कदम हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को मजबूत बनाने में बहुत उपयोगी साबित होंगे।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड श्रमिक बाहुल्य उद्योग है। साथ ही यह हिंदी भाषी (क क्षेत्र) क्षेत्र में स्थित है। इसलिए यहाँ पर श्रमिक हित में और राजभाषा नीति के अनुरूप कार्य करने के लिए हमें हिंदी में ही समस्त कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। आज के तकनीकी युग में हिंदी में काम करने के लिए बहुत सी उपयोगी तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके प्रयोग से सामान्य प्रयास से अल्प समय में ही हिंदी में बेहतर कार्य किया जा सकता है।

मैं सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग करते हुए मूल रूप से हिंदी में काम करना आरंभ करें। इसमें किसी भी प्रकार की समस्या होने पर राजभाषा विभाग आपके सहयोग के लिए सदैव तैयार है।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ!

गोपाल सिंह
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

संरक्षक की कलम से

प्रिय साथियों,

14 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशित कंपनी की गृह-पत्रिका 'कोयला भारती' के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी साथियों के साथ प्रथम बार अपने विचार साझा करते हुए एक खास अनुभूति हो रही है। कंपनी की प्रगति में सामान्य मजदूर से लेकर सर्वोच्च स्तर के अधिकारियों तक का अपना विशेष योगदान रहता है। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मिलकर ही किसी संस्था को सुदृढ़ बनाते हैं। सही दिशा में आवश्यक मेहनत, लगन और निष्ठा के साथ किए गए सभी के समेकित प्रयासों से ही कोई कंपनी आगे बढ़ती है। आपसी सामंजस्य और सहयोग की भावना से एक परिवार के रूप में हम सभी बीसीसीएल को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आपकी कार्यकुशलता व निष्ठा को देखते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर हर चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता रखते हैं।

वर्तमान प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जब कोविड-19 महामारी के कारण अधिकांश औद्योगिक गतिविधियां बंद पड़ी थी और संपूर्ण विश्व लॉकडाउन का सामना कर रहा था तब हम निरंतर देश की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे थे। कोयला उद्योग के आवश्यक सेवा में होने के कारण हमारे सभी कोयला कर्मी उचित सावधानी के साथ सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत निरंतर कोयला उत्पादन में लगे हुए हैं। विपरीत परिस्थितियों और इस महामारी के माहौल में भी अपनी पूरी क्षमता के साथ आप कार्यरत हैं। मैं आप सभी के महत्त्वपूर्ण योगदान की सराहना करता हूँ।

जहां एक ओर कोयला उत्पादन करना हमारा प्राथमिक उद्देश्य है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण, कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर), श्रमिक कल्याण, अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं, बेहतर कार्य संस्कृति और स्वस्थ एवं सहयोगात्मक कॉरपोरेट वातावरण उपलब्ध कराने के साथ ही साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में राजभाषा कार्यान्वयन का ध्यान रखना भी हमारा दायित्व है।

भारत सरकार का उपक्रम और 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण कंपनी में शत प्रतिशत पत्राचार एवं निर्धारित नियमों के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन करना न केवल हमारी जिम्मेदारी है अपितु हमारी संवैधानिक बाध्यता भी है।भारत सरकार ने हमें शत-प्रतिशत पत्राचार हिंदी में करने का लक्ष्य दिया है। यह लक्ष्य हम सभी के समेकित प्रयासों से ही प्राप्त हो सकेगा। हम अपना अधिकतम कार्यालयीन कार्य संघ की राजभाषा हिंदी में ही करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन का निर्धारित लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

हिंदी में कार्य करना अब पहले जितना मुश्किल नहीं है। वर्तमान में उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं की सहायता से हम आसानी से हिंदी में टाइप कर सकते हैं, ऑनलाइन अंग्रेजी से हिंदी में सामान्य अनुवाद कर सकते हैं, बोलकर टाइप कर सकते हैं और हिंदी में लिखे हुए पाठ को सुन भी सकते हैं। यूनिकोड मानक के आ जाने से अब कंप्यूटर व मोबाइल आदि डिजिटल उपकरणों में हिंदी में भी आसानी से कार्य किया जा सकता है। सभी महाप्रबंधकों और विभागाध्यक्षों से अपेक्षा है कि अपने नियंत्रणाधीन कार्यालयों में राजभाषा संबंधी नियमित बैठकों, आवधिक प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं तथा अन्य वांछित कार्यकलापों का आयोजन सुनिश्चित करें।

'कोयला भारती' पत्रिका का यह अंक 'हिंदी दिवस' के अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है, उम्मीद है पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और हिंदी में कार्य करने की दिशा में प्रेरित करेगी। अंत में आप और आपके परिवार के अच्छे स्वास्थ्य की मंगल कामनाओं के साथ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं और पत्रिका संपादन से जुड़े सभी सदस्यों के सार्थक प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई।

पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड

पाठक प्रतिक्रिया

श्री उदयवीर जी,

सही ही कहा गया है कि हीरा कोयले की खदानों में ही मिलता है, वैसे ही कोयला क्षेत्र की साहित्यक चमक के रूप में कोयला भारती के अवलोकन का अवसर प्राप्त हुआ है। आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं विषय से संदर्भित है। इस अंक के माध्यम से प्राकृतिक व खनिज संपदा से युक्त खारखंड राज्य के पर्यटन व दर्शनीय स्थल की झांकी को बखूबी प्रकट किया गया है। 'वैश्विक पटल पर उभरती हिंदी', 'रिश्तों की महक' लघु कथा और 'महिलाओं के विरूद्ध हिंसा और इससे निपटने के उपाय'जैसे आलेख पाठकों के लिए उपयोगी जानकारी प्रस्तुत करने मे सफल रहे हैं। 'प्रकृति का संदेश : जियो और जीने दो' का वर्तमान जीवन में बढ़ती आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। 'हमारा भारत' व 'चाय और रिश्ते' कविताएं भी मनोरंजक हैं।

इसके अलावा संगठन में राजभाषा गतिविधियों से ज्ञात होता है कि कार्यालय राजभाषा के प्रति समर्पित है। पत्रिका के संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई। अगले अंक की प्रतीक्षा में ......

सादर।

(ललन कुमार)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र
सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम) विशाखापत्तनम

प्रतिष्ठा में,
संपादक,
कोयला भारती
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

महाशय,

कोयला भारती का 32वां अंक हस्तगत हुआ। आपके संपादकत्व में पत्रिका चाक्षुस होने के साथ ही गंभीर व स्तरीय भी होती जा रही है। इस हेतु मेरी शुभेच्छा। इस कोरोना काल में लॉकडाउन के दुष्काल में कोयलाकर्मियों की रचनाधर्मिता अपने उत्पादन/उत्पादकता के साथ ही उत्तरेत्तर विकासमान हैं, यह आश्वस्तिदायक लगा। आपके संपादकीय "प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा" हाल में ही सरकार द्वारा पारित नई शिक्षा नीति पर आपकी चिंताकुल सोच का सरोकार लगा। सभी रचनाएं पठनीय हैं। चुनांचे प्रकृति का संदेश: जिओ और जीने दो, किडनी ट्रांसप्लांटेशन (डॉ दीपक प्रकाश) मैं एक ही बैठक में पढ़ गया। पत्रिका की सरपरस्ती में शीर्ष नेतृत्व का होना इसे दीर्घजीविता प्रदान करेगा, ऐसी आशा है।

आपका
(राजेंद्र राम)
बोर्ड सचिवालय,
कोयला भवन मुख्यालय, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

संपादकीय

संपर्क भाषा हिंदी:भारत की भाषायी विविधता में एक सेतु

अनेकता में एकता हमारे देश भारत की अनुपम परम्परा रही है। इस विशाल देश में लोगों के रीति-रिवाजों, खान-पान, पहनावे और रहन-सहन में व्यापक भिन्नता तो है ही, यहाँ अलग-अलग राज्यों में हजारों भाषा-बोलियों का भी अस्तित्व है। भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ यूरोपीय, द्रविड़, आस्ट्रो–एशियाटिक और चीनी–तिब्बती चार भाषा परिवारों की लगभग 1650 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। वर्तमान में भारत में आधिकारिक रूप से 22 भाषाएँ (हिंदी, संस्कृत, मलयालम, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, बंगला, पंजाबी, गुजराती, कश्मीरी, उर्दू, ओड़िया, असमिया, बोडो, संथाली, सिंधी, मैथिली, डोगरी, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली) संवैधानिक मान्यता प्राप्त हैं जिन्हें आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया गया है। इस देश में सैकड़ों ऐसी भाषाएँ भी हैं जो इस सूची में दर्ज नहीं हैं। जहां इतनी अधिक भाषायी विविधता हो वहाँ संपर्क भाषा का विशेष महत्त्व होता है। संपर्क भाषा ही एक ऐसी कड़ी होती है जो एक छोर से दूसरे छोर के लोगों को जोड़ने और उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है।

अनेक भाषाओं के अस्तित्व के बावजूद जिस विशिष्ट भाषा के माध्यम से किसी क्षेत्र, प्रदेश या देश के विभिन्न भाषा-भाषी वर्गों के ऐसे लोगों के बीच जो एक दूसरे की भाषा नहीं जानते, पारस्परिक विचार-विनिमय अथवा संप्रेषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह संपर्क भाषा कहलाती है। इसे ही जनभाषा कहते हैं, कभी-कभी इसे सेतु-भाषा, व्यापार भाषा, सामान्य भाषा या वाहन-भाषा भी कहते हैं। संपर्क भाषा का ही विस्तृत रूप है अंतरराष्ट्रीय भाषा। मानव इतिहास में संपर्क भाषाओं का उठान-अवसान होता रहा है।

भारत के इस बहुसंख्यक भाषायी परिदृश्य पर बोलने वालों की संख्या और भौगोलिक दृष्टि से जब विचार किया जाता है तो पता चलता है कि इस देश में हिंदी ही केंद्रीय महत्त्व की एक मात्र भाषा है। यह देश के सबसे बड़े भू–भाग की भाषा है जो उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, झारखंड तथा दिल्ली सहित दस प्रदेशों की प्रधान भाषा है और देश के कई अन्य प्रदेशों में गौड़ भाषा के रूप में भी प्रचलित है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार–हिंदी और उसकी बोलियों को मिलाकर कुल बोलने वालों की संख्या 52,83,47,193 बतायी गयी है जो देश का जनसंख्या का लगभग 43.63 प्रतिशत है। यही कारण है कि देश में कुछ छिटपुट भाषा विवाद के बावजूद, हिंदी को ही भारत की प्रतिनिधि भाषा माना जाता है।

भारत के इतिहास पर अगर नजर डालें तो पाते हैं कि भाषायी विविधता होते हुए भी यहां हर युग में देश की एक प्रमुख संपर्क भाषा अवश्य रही है। आरंभ में संस्कृत यहां की प्रमुख भाषा रही और बाद में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। इसके बाद मुगल काल में अरबी-फारसी के साथ हिंदी इस देश की प्रमुख संपर्क भाषा रही और न्यूनाधिक रूप से अंग्रेजी शासनकाल में भी हिंदी राष्ट्रीय एकता की एक सशक्त कड़ी के रूप में विद्यमान रही है। आजादी की लड़ाई के समय महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि हिंदीतर भाषी सभी महापुरुषों ने एक मत से हिंदी का समर्थन किया था। हिंदी हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आन्दोलनों की ही नहीं अपितु राष्ट्रीय चेतना एवं स्वाधीनता आंदोलन की अभिव्यक्ति की भाषा भी रही है। विशाल भारत देश में उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम के आयोजनों, मेलों, या विभिन्न प्रदेशों की हमारी सांस्कृतिक एकता के आधार स्तंभ तीर्थस्थलों आदि सभी स्थानों पर आदान-प्रदान की भाषा के रूप में हिंदी का ही अधिकतर प्रयोग होता है। हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'।

हिंदी के इसी महत्त्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही इसीलिए सूचना प्रौद्योगिकी में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। अब ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें भी बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जाने लगीं हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रसार अब क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर से बढ़कर भारतीय उपमहाद्वीप तक है।

वही भाषा जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। इसी कामना के साथ हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशित भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह-पत्रिका **'कोयला भारती'** का यह 33वां अंक आपके बीच प्रस्तुत है। सुधी पाठकों के विचार, सुझाव और समालोचनात्मक प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

उदयवीर सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

अंक – 33, अर्ध वार्षिक
सितंबर, 2020

अध्यक्ष
गोपाल सिंह
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
पी. वी. के. आर. मल्लिकार्जुन राव
निदेशक (कार्मिक)

विशेष सहयोग
एस. एन. सिन्हा
महाप्रबंधक (कार्मिक)/ जनसंपर्क
आशीष कुमार बोस
विभागाध्यक्ष, भुगतान विभाग
अनिल कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)
दीपक कुमार सिन्हा
प्रबंधक/सचिव (राजभाषा)
गणेश कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (वित्त)
अरिजित चक्रवर्ती
सहायक प्रबंधक (जन संपर्क)

वरिष्ठ संपादक
दिलीप कुमार सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
महेन्द्र कुमार सिंह, वरीय निजी सहायक
अनिरुद्ध नोनिया, सहायक अनुवादक
वंदना देवी, सहायक अनुवादक

प्रकाशक
राजभाषा विभाग
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद- 826005
दूरभाष : 0326-2236463
फैक्स : 0326-2230262

'कोयला भारती' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे प्रकाशक / संपादक / बीसीसीएल प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार उत्तरदायी हैं। न्यायिक सीमा, धनबाद। निःशुल्क, आंतरिक वितरण हेतु।

कोयला भारती

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की गृह पत्रिका

अनुक्रम

06 नयी शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं का स्थान
11 कोरोना वायरस : कारण, निवारण एवं बचाव
15 कोरोना काल और हमारी जड़ें
17 भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव
19 राष्ट्रीय एकता और हिंदी
21 अगर किसी चीज़ को पाना है तो उसे शिद्दत से चाहो
23 महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा
25 मेरी रूस यात्रा
कविताएं:
27 स्त्री
28 बसंत गीत
28 नन्ही कोंपल
29 केवल एक पुल
29 कोरोना
30 सुरक्षा प्रशिक्षण उत्पादन की आत्मा
32 कोविड-19 के खिलाफ़ बीसीसीएल के प्रभावी कदम
34 कंपनी गतिविधियाँ

संपादक
उदयवीर सिंह
उप प्रबंधक (राजभाषा)

नोटः 'कोयला भारती' पत्रिका में प्रकाशन हेतु आप अपनी रचनाएँ ई-मेल udayvir4@gmail.com पर भी भेज सकते हैं

नयी शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं का स्थान

- दिलीप कुमार सिंह

सार:

किसी भी भाषा के लुप्त होने या उसके संकटग्रस्त श्रेणी में आ जाने के परिणाम बहुत दूरगामी होते हैं। भाषा का एक-एक शब्द महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक शब्द अपने पीछे संस्कृति की एक लंबी परंपरा को लेकर चलता है। इसलिए भाषा लुप्त होते ही संस्कृति पर खतरा मंडराने लगता है। संस्कृति और उस भाषा के संचित ज्ञान को बचाने के लिए भाषा के संरक्षण की बहुत आवश्यकता है। भारत की नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में इस बात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा गया है कि दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नही मिल पायी है, जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है। युनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को 'लुप्तप्राय' घोषित कर दिया है। देश में इन समृद्ध भाषाओं/संस्कृति की अभिव्यक्ति को संरक्षित या उन्हें रिकार्ड करने के लिए कोई ठोस नीति अभी तक नहीं थी। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी भारतीय भाषाओं विशेषकर मातृभाषाओं या स्थानीय भाषाओं को प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य शिक्षा का माध्यम और उसके आगे यथासंभव भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाए जाने की बात कही गयी है। भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए यह एक बहुत बड़ा कदम है। इस कार्य के लिए अनेक अकादमी व संस्थान भी खोले जाने की घोषणा की गयी है। इन नीति में भारत की सभी भाषाओं के साथ संतुलन बनाने की कोशिश की गयी है।इस नीति में यह भी कहा गया है कि दुनिया भर के विकसित देशों में अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में शिक्षित होना कोई बाधा नहीं है और इसका भरपूर लाभ उन्हें मिलता है, जबकि भारत में अभी भी यह बहुत मुश्किल कार्य है।

मानव के सम्यक विकास, मन की कल्पना को मूर्त रूप प्रदान करने, स्वस्थ समाज और समृद्धिशाली व शक्तिसंपन्न राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का महत्त्व निर्विवाद रूप से सर्वाधिक है। भारत में बहुत पुराने समय से ही शिक्षा की बहुत समृद्ध परंपरा रही है। भारत दुनिया को हजारों वर्षों से ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करता रहा है। भारत की महान ज्ञान परंपरा और शिक्षा व्यवस्था ने आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, चरक, सुश्रुत, पाणिनि, नागार्जुन, गौतम, मैत्रेयी, गार्गी जैसे अनेक महान विद्वानों को जन्म दिया है। इन विद्वानों ने अपनी भाषा में खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा विज्ञान, व्याकरण, दर्शन, योग, अभियांत्रिकी, वास्तुकला, भवन निर्माण आदि में विश्व को मौलिक योगदान दिया है।

समय के साथ इस शिक्षा व्यवस्था में बहुत क्षरण होता गया। जिस देश में कभी तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला विश्वविद्यालय जैसे विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान हुआ करते थे, आज उसके विश्वविद्यालय दुनिया भर में शीर्ष 300 में स्थान बनाने के लिए संघर्षरत हैं। इसके अनेक ऐतिहासिक व राजनीतिक कारण रहे हैं। पराधीन भारत में यहाँ की गौरवशाली शिक्षा प्रणाली को नष्ट किया गया। प्राचीन शिक्षा प्रणाली नष्ट होने से ज्ञान के सभी क्षेत्रों में क्षरण होना शुरू हो गया।

स्वतंत्र भारत में राष्ट्र निर्माण के लिए स्पष्ट और सुविचारित शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गयी। इसके लिए पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 1968 में तैयार की गयी। इस नीति में तमाम प्रावधानों के साथ ही 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाओं के अध्ययन पर बल, त्रिभाषा सूत्र का निर्माण, संस्कृत के अध्ययन की जरूरत जैसे प्रमुख बिंदु थे।

वर्ष 1986 में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गयी। इसके अंतर्गत अल्पसंख्यकों, दिव्यांगों, महिलाओं, अनुसूचित

जातियों/ जनजातियों को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहन, छात्रवृत्तियों में वृद्धि, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड आदि प्रमुख बिंदुओं में से थे। इस नीति में जीडीपी का कुल 6% शिक्षा पर खर्च करने की सिफारिश की गयी थी। इसमें 1992 में कुछ संशोधन भी किए गए थे। इस शिक्षा नीति में भी शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं की वकालत की गयी थी। अंग्रेजी व अन्य विदेशी भाषाओं के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराने पर बल दिया गया था। साथ ही हिंदी को संपर्क भाषा के तौर पर विकसित करने की आवश्यकता जताई गई थी।

वर्ष 2020 में लागू की गयी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी अन्य महत्त्वपूर्ण नीतियों के साथ ही भाषाओं, विशेषकर मातृभाषा और स्थानीय भाषा में शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है। अब तक लागू की गयी तीनों ही राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में शिक्षा माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा को सुझाया गया है। इसके साथ ही अंग्रेजी व संस्कृत के अध्ययन पर बल दिया गया है। इससे पता चलता है कि शिक्षा नीति के द्वारा देश की भाषा नीति को भी निर्धारित करने के प्रयास किए गए हैं।

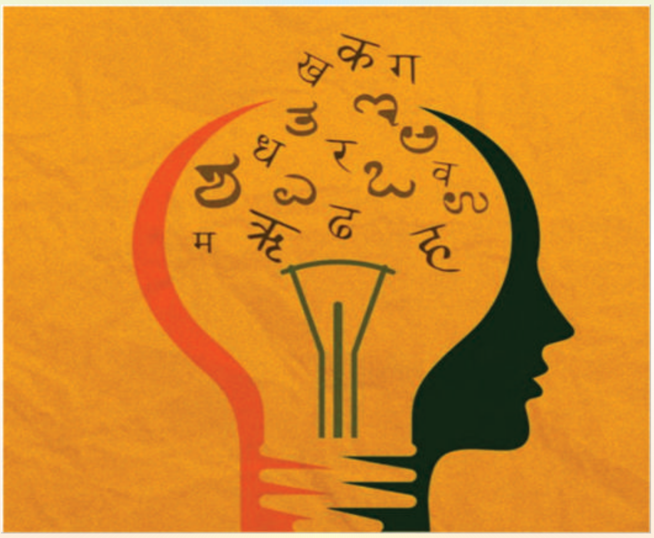

तृतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के बारे में बाकी दोनों शिक्षा नीतियों की तुलना में बहुत अधिक विस्तार से चर्चा की गयी है। इसके अध्याय-4 और अध्याय-22 दोनों में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा, भाषा का संरक्षण व संवर्धन और अनुवाद के लिए नीति निर्धारित की गयी है। अध्याय-4 में मातृभाषा और/या स्थानीय भाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम और आगे के लिए यथासंभव भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना निर्धारित किया गया है। अध्याय-22 में समस्त भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन करने की बात कहते हुए शिक्षा प्रणाली में बहुभाषिकता को समय की आवश्यकता बतायी गयी है।

अध्याय 4 में मातृभाषा या स्थानीय भाषाओं में शिक्षण के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं। कक्षा-5 तक अनिवार्य रूप से शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए। आगे यह भी कहा गया है कि यह बेहतर होगा कि ग्रेड-8 और उससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा हो। सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसका अनुपालन करेंगे। यदि निजी स्कूल इस नीति को मानेंगे तभी इसके अपेक्षित परिणाम सामने आयेंगे। इसमें इस बात को स्पष्ट तौर पर रेखांकित किया गया है कि **किसी भाषा को सीखने के लिए इसे शिक्षा का माध्यम होने की आवश्यकता नहीं है**। भारत में केवल अच्छी अंग्रेजी सिखाने के उद्देश्य से पूरी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था को अंग्रेजी माध्यम से अपनाये जाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। भले ही छात्र अवधारणाओं को समझने के बजाए रटने पर मजबूर हों। यूनेस्को द्वारा जारी ग्लोबल रिपोर्ट 2005 के एक तथ्य के अनुसार एक बार विषय की मूल अवधारणा अपनी भाषा में समझ में आ जाए तो उच्चतर शिक्षा में किसी भी भाषा में अध्ययन सहज हो सकता है।

दुनिया भर के भाषाविद और शिक्षाविद इस बात पर निर्विवाद रूप से एकमत हैं कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने से बच्चों की मौलिक रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में निश्चय ही मदद मिलती है। मातृभाषा में शिक्षा से बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को बचाया जा सकता है। भाषाविदों का मानना है कि जो बच्चे अपनी मातृभाषा में जितनी ज्यादा पकड़ रखते हैं, वे उतने ही रचनात्मक और तार्किक होते हैं। इससे मस्तिष्क पर अनावश्यक बोझ नहीं पड़ता है। हमारे देश में शिक्षा पर समय-समय पर गठित सभी समितियों, सभी शैक्षिक आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही बनाए जाने की बात कही गयी है।

वर्तमान में भारत में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों की स्थिति और उनकी संख्या लगातार दयनीय होती जा रही है। वहीं अंग्रेजी माध्यम के स्कूल स्थानीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों को निगलते जा रहे हैं। भारतीय भाषाओं के बहुत से स्कूल अंग्रेजी माध्यम में बदलते जा रहे हैं। इस दिशा में सरकारी स्तर पर कार्य हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के तमाम सरकारी स्कूलों को चरणबद्ध तरीके से अंग्रेजी माध्यम में बदला जा रहा है। इससे संबंधित तमाम खबरें पिछले वर्षों में समाचार-पत्रों की सुर्खियाँ बनीं। बिज़नेस स्टैंडर्ड के दिनांक 20 नवंबर, 2019 की खबर के मुताबिक आंध्र प्रदेश के सभी सरकारी स्कूलों को अकादमिक सत्र 2020-21 से कक्षा 1 से 6 तक के लिए अंग्रेजी माध्यम स्कूल में बदल दिया जाएगा। इस प्रकार की व्यवस्था देश के लिए घातक होगी।

महात्मा गांधी ने 20 अक्टूबर, 1917 को गुजरात के भड़ौच में एक शिक्षा सम्मेलन में कहा था - "विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझ पड़ता है, वह असह्य है। यह बोझ हमारे बच्चे उठा तो सकते हैं, लेकिन उसकी कीमत हमें चुकानी पड़ती है, वे दूसरा बोझ उठाने लायक नहीं रह जाते हैं। इससे हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। इससे हम नयी योजनाएं नहीं बना सकते हैं और यदि बनाते भी हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर पाते हैं।"

आज विडंबना है कि डॉलर में वेतन दिलवाने वाले रोजगार के अवसर अंग्रेजी में ही उपलब्ध हैं। इसके चलते बाजार की मांग अंग्रेजी के पक्ष में ही अधिक है। हालांकि यह स्थिति विश्व में अमेरिका के ताकतवर रहने और विश्व व्यापार की मुद्रा डॉलर के रहने तक ही रहेगी। देश में शैक्षिक परिदृश्य कुछ इस प्रकार का बन गया है कि चारों ओर अंग्रेजी माध्यम के ही स्कूल दिखायी देते हैं। इसी अंग्रेजी की अनिवार्यता से देश की मौलिकता को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है। यहाँ पर अंग्रेजी से बैर नहीं है लेकिन उसकी अनिवार्यता देश के लिए घातक बन गयी है। हालांकि एक विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखना बहुत आवश्यक है। यूनेस्को की ग्लोबल रिपोर्ट 2005 में भी सिफारिश की गयी है कि जातीय रूप से विविधतापूर्ण समुदाय में न्यूनतम 6 वर्षों तक मातृभाषा में शिक्षा देना अनिवार्य है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा के माध्यम से इतर दूसरी भाषा बोलने वाले मुख्य धारा से पीछे न छूट जाएं।

पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों की भांति नयी नीति में भी बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा सूत्र को लागू किए जाने की बात कही गयी है। इसके लिए किसी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाने का प्रावधान किया गया है। यह कदम सभी भारतीय भाषाओं में संतुलन बनाने के उद्देश्य से उठाया गया है। सभी राज्य अपनी जरूरत के अनुसार तीनों भाषाओं का निर्धारण कर सकेंगे।

अध्याय-4 में ही संस्कृत की महत्ता के बारे में लिखा गया है कि संस्कृत का शास्त्रीय साहित्य इतना विशाल है कि सारे ग्रीक और लैटिन साहित्य को भी यदि मिलाकर इसकी तुलना की जाए तो भी इसकी बराबरी नहीं कर सकता है। इस नीति के अनुसार संस्कृत को त्रिभाषा के मुख्य धारा विकल्प के साथ और स्कूल व उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों के लिए एक महत्त्वपूर्ण, समृद्ध विकल्प के रूप में पेश किया जाएगा। वास्तव में संस्कृत की महत्ता से सभी भलीभांति वाकिफ हैं, किंतु देश में संस्कृत का अध्ययन कम होता जा रहा है। यदि इसको जानने वाले लोग ही नहीं रहेंगे तो संस्कृत में उपलब्ध अपार ज्ञान संपदा का लाभ कौन उठा पाएगा। इस नीति में संस्कृत का महत्त्व बताते हुए इसके सुव्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता बतायी गयी है। गौरतलब है कि जिन विद्याशाखाओं में हम विश्वगुरू थे, आज संस्कृत की प्राचीन अध्ययन परंपरा मूल स्वरूप में न रहने के कारण हम आयातित ज्ञान पर निर्भर हो गए हैं।

भाषा और संस्कृति का आपस में गहरा रिश्ता है। हमारी संस्कृति हमारी भाषाओं में निहित है। नयी शिक्षा नीति के अध्याय-22 में स्पष्ट है कि संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा। इसके लिए पहली बार शिक्षा नीति में लुप्त हो चुकी और लुप्तप्रायभाषाओं पर चिंता व्यक्त की गयी है। इसमें उल्लेख किया गया है कि देश ने विगत 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है।

यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय घोषित किया है। विभिन्न भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। यदि शिक्षा प्रणाली बहुभाषी होगी और भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाएगा, तो काफी हद तक इस समस्या का निपटान किया जा सकता है। भाषा के लुप्त होने से पूरे समाज को क्षति होती है और हजारों वर्षों में सहेजी गयी विरासत और धरोहर नष्ट हो जाती है। उदाहरण के लिए आदिवासी समाज की भाषाएं आज सर्वाधिक हाशिए पर हैं, और इन भाषाओं में व्यक्त प्रकृति विषयक या अन्य प्रकार के ज्ञान का यदि संरक्षण नहीं किया जाएगा तो भाषा लुप्त होने के साथ ही ज्ञान भी नष्ट हो जाएगा और अंत में आदिवासी संस्कृति का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा।

इसी अध्याय में भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज तमाम भाषाओं के समक्ष आसन्न संकट की भी बात उठायी गयी है और कहा गया है कि ये भाषाएं भी कई प्रकार के संकटों का सामना कर रही हैं। भाषाओं को चुनौतीपूर्ण स्थितियों से बचाने के लिए और उनको प्रासंगिक व जीवंत बनाए रखने के लिए उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बनाए रखने की अपेक्षा भी इस नीति में की गयी है। समसामयिक मुद्दों और अवधारणाओं को इसमें व्यक्त करने की क्षमता बनाने के लिए इन

सभी भाषाओं के शब्दकोश और शब्द भंडार को आधिकारिक रूप से लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता जतायी गयी है। ऐसा कार्य दुनिया के तमाम देशों द्वारा अपनी भाषाओं की प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए किया जाता है। भारतीय भाषाओं में इस दिशा में बहुत कम काम हुआ है। इसीलिए नई संकल्पनाओं और अवधारणाओं को भारतीय भाषाओं में व्यक्त करने में समस्याएं होती हैं।

भारत में भाषा शिक्षण को बहुत गंभीरता से कभी नहीं लिया गया है। इस नीति में उच्चतर योग्यता के भाषा शिक्षकों की कमी पर चिंता जाहिर करते हुए उच्चतर योग्यता के भाषा शिक्षकों के एक बड़े संवर्ग (कैडर) को विकसित करने की जरूरत बतायी गयी है। इससे भविष्य में बहुत बड़े स्तर पर भाषा शिक्षकों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे और बहुभाषी पाठ्यक्रमों के निर्माण में बहुत मदद मिलेगी। शिक्षा का माध्यम और शिक्षा में भारतीय भाषाओं को समुचित स्थान न मिल पाने एक बहुत बड़ा कारण यह भी रहा है।

दुनिया भर के विकसित देश अपने यहाँ केवल अंग्रेजी में ही उपलब्ध ज्ञान को ही सर्वोपरि नहीं मानते हैं बल्कि इसके लिए वे विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध उच्चस्तरीय ज्ञान को अपने देश की स्थानीय भाषाओं में अनुवाद करवाते हैं और इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवाते हैं। भारत में अनुवाद को लेकर किसी प्रकार की स्पष्ट राष्ट्रीय नीति की कमी रही है। भारतीय भाषा संस्थान मैसूर द्वारा राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (एनटीएम) की स्थापना कुछ वर्षों पहले की गयी थी। पहली बार इस नीति में अनुवाद के महत्व को रेखांकित किया गया है। अनुवाद एवं निर्वचन को और अधिक विस्तार देने के लिए कहा गया है ताकि देशवासियों को भारतीय व विदेशी भाषाओं की उच्चस्तरीय गुणवत्ता वाली सामग्री को उपलब्ध कराया जा सके। इसके लिए इस नीति में भारत में इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटीआई) की स्थापना के लिए प्रावधान किया गया है। इस संस्थान में बहुभाषाभाषी और विषय विशेषज्ञ तथा अनुवाद एवं निर्वचन के लिए विशेषज्ञों की नियुक्ति की जाएगी। यह संस्थान देश के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण साबित होगा तथा राष्ट्रीय महत्व के कार्य यहाँ पर संपन्न होंगे। यह संस्थान देश में अनुवाद प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने का कार्य करेगा। अभी तक देश में इस दिशा में कुछ विशेष प्रयास नहीं हुए हैं।

भारत की शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा प्राप्त सभी भाषाओं और उनके साहित्य का अध्ययन करने के लिए संस्थानों और विश्वविद्यालयों को विस्तार देने के लिए भी इस नीति में चर्चा की गयी है। इसके अंतर्गत उपेक्षित हजारों पांडुलिपियाँ को इकट्ठा करने व अनुवाद करने और अध्ययन करने के मजबूत प्रयास करने के प्रावधान किये गए हैं। इस कार्य के लिए देश भर के संस्कृत एवं सभी भारतीय भाषाओं के संस्थानों एवं विभागों को उल्लेखनीय रूप से सशक्त बनाया जाना है।

भारतीय भाषाओं में शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से भाषाओं के प्रति समर्पित एक नया संस्थान स्थापित करने की योजना भी इस नीति के अंतर्गत बनायी गयी है। एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात इस नीति में है कि पाली, प्राकृत और फ़ारसी भाषा के लिए एक राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किया जाएगा। इससे इन भाषाओं के संस्थानों को एक नया आयाम मिलेगा। इन सभी संस्थानों के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं (शास्त्रीय, आदिवासी और लुप्तप्राय) को संरक्षित और प्रोत्साहित किया जाएगा। इस कदम से इन भाषाओं में बड़े पैमाने पर शोधकार्यों की शुरुआत हो सकेगी और इन भाषाओं में उपलब्ध प्राचीन ज्ञान को जनसामान्य के लिए उपलब्ध कराया जा सकेगा।

भाषा के व्यवस्थित अध्ययन और शोधकार्य के लिए भाषा विशेष के संस्थान होने परम आवश्यक हैं। इस उद्देश्य से विभिन्न विषयों की नवीन अवधारणाओं और संकल्पनाओं को आमजन की भाषा में सुलभ कराने के उद्देश्य से संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी स्थापित किए जाने की घोषणा इस नीति में की गयी है। भाषा संवर्धन के लिए यह बहुत उपयोगी कदम साबित होगा। इन अकादमियों के माध्यम से इन सभी भाषाओं में नियमित रूप से नवीनतम शब्दकोश जारी किए जाएंगे। इसके अलावा 8वीं अनुसूची के अतिरिक्त भारत की अन्य बड़ी भाषाओं के लिए भी अकादमी स्थापित करने की घोषणा भी इस अध्याय में की गयी है। इससे भारत की तमाम भाषाओं की उन्नति का मार्ग खुल जाएगा और इन सभी भाषाओं में सुव्यवस्थित तरीके से अध्ययन और शोध कार्य होने लगेंगे और इन भाषाओं के संरक्षण का कार्य हो सकेगा।

भाषा को संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्यभाषायी डिजिटलीकरण के बिना अधूरा है। इसे ध्यान में रखते हुए इस नीति में डिजिटलीकरण के लिए प्रावधान किए गए हैं। इस नीति में स्पष्ट तौर पर उल्लेख है कि भारतीय भाषाओं और उनसे संबंधित स्थानीय कला एवं संस्कृति का वेब आधारित प्लेटफॉर्म, पोर्टल, विकीपीडिया के माध्यम से दस्तावेजीकरण किया जाएगा। यह कार्य व्यापक तौर पर जन भागीदारी के माध्यम से किए जाएंगे। ऐसी सभी परियोजनाओं में सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। यह कदम लुप्त हो चुकी और लुप्तप्राय दोनों प्रकार की भाषाओं के लिए समान रूप से उपयोगी साबित होगा।

इस नीति में भाषा, कला और संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सभी आयु के लोगों के लिए छात्रवृत्ति की स्थापना की बात कही गयी है। प्रोत्साहन स्वरूप भारतीय भाषाओं में रचे जानी वाली उत्कृष्ट कविता व गद्य के लिए पुरस्कार स्थापित किए जाएंगे।

भारतीय भाषाओं की उन्नति और प्रगति तभी संभव है, जब उसे प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार से जोड़ा जाएगा। भारतीय भाषाओं को रोजगार की दृष्टि से अभी भी अंग्रेजी वाला स्थान प्राप्त नहीं है। इस बात को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समझा गया है और बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "**भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोजगार के मानदंडों की अर्हता में शामिल किया जाएगा**"। भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा बढ़ाने में यह बहुत महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा। भारत में अंग्रेजी को रोजगार दिलाने में सहायक भाषा के रूप में जाना जाता है। इसलिए केवल इस भाषा में प्रवीणता प्राप्त करने को ही सफलता की कुंजी मान लिया जाता है। जब यह गौरव अन्य भारतीय भाषाओं को मिलेगा तब स्वतः ही भारतीय भाषाओं के समक्ष उत्पन्न संकट दूर हो जाएगा।

इस प्रकार नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारतीय भाषाओं के लिए भी एक नीति निर्धारित की गयी है। विविध तरीकों से भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित, संरक्षित और संवर्धित करना इसके प्रमुख उद्देश्यों में से है। सभी महत्त्वपूर्ण भारतीय भाषाओं के लिए अकादमी, इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन, भाषा संस्थान, शास्त्रीय भाषाओं के लिए विश्वविद्यालयों में विभाग तथा पालि, प्राकृत व फारसी के लिए राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना, संस्कृत के अध्ययन का विस्तार, लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए नीति, छात्रवृत्ति व पुरस्कारों की स्थापना, रोजगार के मानदंडों में भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को अर्हता के रूप में शामिल करना कुछ ऐसे कदम हैं जो भारत में आने वाले दिनों में भारतीय भाषाओं की दशा, दिशा और भविष्य सब कुछ बदल कर रख देंगे। बशर्ते कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के इन प्रावधानों को उसी भावना से लागू किया जाए जिस भावना से नीति निर्माताओं ने इन्हें शामिल किया है।

उप प्रबंधक (राजभाषा)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

कोरोना वायरस : कारण, निवारण एवं बचाव

- डॉ. दीपक प्रकाश

एक अदना-सा वायरस जो खुली आंखों से दिखता भी नहीं है, आकार-प्रकार के मामले में जिसकी कोई बिसात नहीं है। ऐसे एक वायरस के आतंक से पूरी दुनिया की मानव जाति संकट में फंसी हुई है। उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते, अखबारों में, टीवी में, गली-मुहल्लों में, अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, व्यवसायी, राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, मनोवैज्ञानिक आदि सभी के बीच केवल इसी की चर्चा हो रही है। इसके आतंक की वजह से पूरी दुनिया की सभी छोटी-बड़ी, अच्छी-बुरी, जरूरी व गैर-जरूरी गतिविधियों पर ताला लग गया है। गांव, देहात, शहर, देश, विदेश की गलियां, सड़कें, उद्योग-धंधे, कल-कारखाने, शिक्षण संस्थान, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे, मक्का, मदीना, काबा, काशी सभी जगहों पर सन्नाटा पसरा हुआ है। सभी तरह की गतिविधियां, रोजगार, कामधंधा सब ठप हैं। इंसानों में जीवन के प्रति उत्साह सिमटता जा रहा है। सभी को जान के लाले पड़े हुए हैं। जो जहां है, वहीं डर से दुबके हुए हैं। पता नहीं किधर से इसका आक्रमण हो जाए और जान से हाथ धोना पड़े। मौत के डर के साये से पूरी दुनिया ठहर-सी गई है।

कहना न होगा कि इसकी चपेट में अविकसित, अर्ध विकसित ही नहीं विकासशील, विकसित और महान तथा शक्तिशाली कहलाने वाले देशों को भी घुटनों पर आ गए है। आज पूरी दुनिया अभूतपूर्व संकट का सामना कर रही है। बड़े-बड़े देश जो प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे थे, चांद और मंगल ग्रहों पर बसने की तैयारी कर रहे थे, अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह लड़ाई कब खत्म होगी, कहा नहीं जा सकता। अमेरिका, फ्रांस, इटली, ब्रिटेन,जर्मनी जैसे शक्तिशाली देशों की स्थिति तो और भी बुरी है। उन्हें अपनी शक्ति और हैसियत का पता चल रहा है। इन देशों में मरीजों के संक्रमित होने तथा मौत के आंकड़े दिनों दिन बढ़ते ही जा रहे है, घटने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। बिना किसी हथियार के महज अपनी किसी अदृश्य शक्ति और उपस्थिति से ये वायरस लाखों लोगों को कब्र की शरण में जाने को मजबूर कर रहा है। एटम बम और बड़ी-बड़ी मिसाइलों का दंभ भरने वाले ये सारे देश कुछ भी करने में अक्षम साबित हो रहे हैं।

जी हां, पूरी दुनिया को नाकों चना चबवाने वाला अदना-सा कोई और नहीं एक अदृश्य वायरस है जिसे कोरोना वायरस कहा जाता है। कोरोना वायरस यानी विषाणु प्रजाति का एक प्रकार है जो इंसान तथा जानवर को समान रूप से संक्रमित करता है। पहली बार इसका पता 2019 के दिसंबर में चीन के वुहान नामक शहर में चला। इससे उत्पन्न बीमारी को कोविड-19 कहा जाता है। इसके पहले भी दुनिया भर के देशों में विभिन्न तरह के वायरसों का प्रकोप होता रहा है। लेकिन इस वायरस के सामने उन तमाम वायरस जैसे सार्स, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, इस्टरेस्पीरेटरी सिंड्रोम, इबोला और जीका वायरस कुछ भी नहीं है। कोविड-19 ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया हैं। पूरी दुनिया में करोडों की तादाद में लोग संक्रमित ही नहीं हो रहे हैं बल्कि प्रतिदिन हजारों मौत के मुंह में भी समा रहे हैं। मौत का यह सिलसिला कब रुकेगा, कहा नहीं जा सकता। निकट भविष्य में तो इसके आसार एकदम नहीं दिख रहे हैं।

इसका फैलाव कैसे होता है?

यह वायरस मूलतः श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है और मामूली से लेकर गंभीर बीमारियां होने की संभावना होती है। कोविड-19 से संक्रमित मरीजों के संपर्क से इसका फैलाव दूसरे स्वस्थ लोगों में होता है। खांसने,छींकने तथा बोलने-बतियाने के दौरान मुंह से निकलने वाले थूक के कणों यानी ड्रॉपलेट्स से एक दूसरे में फैलता है। ये ड्रॉपलेट्स अपेक्षाकृत भारी तथा छोटे होते हैं। अतः ज्यादा दूर तक नहीं जा पाते और शीघ्र ही जमीन पर गिर जाते हैं। यदि यह सांस के माध्यम से मुंह तथा नाक के द्वारा शरीर के अंदर चले जाते हैं तो एक स्वस्थ आदमी संक्रमित हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि संक्रमित मरीजों से कम से कम एक मीटर की दूरी बनाए रखी जानी चाहिए। इन ड्रॉपलेट के टेबुल, दरवाजे के हैंडिल तथा सीढ़ियों की रेलिंग में चिपके होने की स्थिति में इसके संपर्क में आने पर स्वस्थ आदमी भी इस वायरस से संक्रमित हो जाता है। स्वस्थ मरीज के हाथ में इस वायरस के चिपक जाने तथा उस हाथ से नाक, कान, मुंह तथा आंखों को छूने से भी मरीज संक्रमित हो जाता है। इसलिए स्वस्थ

आदमियों को समय-समय पर साबुन-पानी या सैनिटाइजर से हाथों को साफ रखने की सलाह दी जाती है।

चूंकि यह वायरस मुख्य रूप से श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है अतः बड़े बुजुर्गों तथा छोटे-छोटे बच्चों को बुरी तरह से प्रभावित करता है। सर्वप्रथम यह श्वसन तंत्र के ऊपरी हिस्से यानी नाक को संक्रमित करता है। उसके बाद धीरे-धीरे नीचे फेफड़ों की ओर बढ़ता जाता है। हालांकि 80 फीसदी मरीजों को इसका संक्रमण मामूली होता है और ऊपरी भाग तक ही सीमित होता है। यदि यह निचले हिस्से यानी फेफड़े तक संक्रमित होता चला गया तो गंभीर रूप धारण कर लेता है, फलस्वरूप मरीज की मौत की संभावना काफी बढ़ जाती है। यहां यह बता देना जरूरी है कि इस बीमारी के बारे में सही-सही और मुकम्मल जानकारी अभी तक न तो चिकित्सकों को और न ही वैज्ञानिकों को मिल पायी है। दुनिया के तमाम देशों के वैज्ञानिक इसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी जुटाने में लगे हुए हैं। फिर भी अभी तक जो भी जानकारी मिल पाई है, उसका अध्ययन की सुविधा के लिए तीन स्टेजों में बांटा जा सकता है।

पहला स्टेज यानी **स्टेज-1**लक्षण रहित होता है। इसका प्रभाव एक से दो दिनों तक ही सीमित होता है। इस दौरान मरीजों में किसी तरह के लक्षण नहीं दिखते हैं। प्रारंभिक अवस्था में वायरस नाक की भीतरी कोमल दीवार तक ही सीमित रहता है। वहीं चिपककर धीरे-धीरे विभाजित होने लगता है यानी संक्रमित वायरस के विभाजन की प्रक्रिया स्वतंत्र रूप से नाक के भीतरी हिस्से से शुरू हो जाती है। इस दौरान नाक के अंदर के स्वाब लेकर उसकी जांच करने पर रोग की पहचान हो जाती है। इस स्टेज में मरीजों को किसी तरह के इलाज की जरूरत नहीं पड़ती है।

दूसरे स्टेज यानी **स्टेज-2** में वायरस श्वसन तंत्र के निचले हिस्से में फैलना शुरु करता है। इस स्टेज में मरीजों को रोग के लक्षण दिखने शुरू होते हैं और काफी मामूली होते हैं। इसका फैलाव श्वसन तंत्र के निचले हिस्से में यानी फेफड़े तक नहीं होता है। ऐसे मरीजों को घर में ही रखकर ठीक किया जा सकता है। अस्पताल में भर्ती कराने की जरूरत नहीं पड़ती है। मामूली लक्षण दिखने पर लक्षण के अनुसार दवा देने से मरीज ठीक हो जाता है।

इस रोग का तीसरा यानी **स्टेज-3** गंभीर, खतरनाक तथा कई बार जानलेवा साबित होता है। दुर्भाग्य से 20 फीसदी स्थिति में संक्रमित मरीजों में वायरस का संक्रमण श्वसन तंत्र के नीचे तक हो जाता है और फेफड़ों के अंदरूनी हिस्सों को बुरी तरह प्रभावित करता है। इस स्थिति में मरीजों को सांस लेने में तकलीफ होने लगती है और हालत गंभीर होने लगती है। ऐसी स्थिति में मरीज को तुरंत कोविड-19 अस्पताल में भर्ती कराने की जरूरत पड़ती है। बुजुर्ग तथा वैसे मरीज जो पहले से अन्य पुराने रोगों जैसे दमा, डायबिटीज, अर्थ्राइटिस, कैंसर आदि से पीड़ित होते हैं तो उन्हें इसका संक्रमण होने की स्थिति में रोग तीसरे स्टेज में पहुंचकर गंभीर रूप धारण कर लेता है और इसमें मरीजों में मौत की संभावना बढ़ जाती है।

कोविड-19 के लक्षण क्या-क्या हैं ?

आज की तारीख में इनके लक्षण में भी तेजी से बदलाव हो रहा है। फिर भी जो मूल लक्षण मरीजों में देखने को मिल रहे हैं वे हैं बुखार, सूखी खांसी, थकान तथा सांस लेने में परेशानी। इसके अतिरिक्त कई मरीजों के पूरे बदन में दर्द, नाक बंद रहना, सर दर्द, आंखों में संक्रमण, गले में खसखसाहट, दस्त तथा घ्राण शक्ति तथा स्वाद का पता न चलना जैसे लक्षण भी देखने को मिल सकते हैं। शुरूआत में ये सारे लक्षण मामूली होते हैं और इनकी शुरुआत धीरे-धीरे होती है।

यहां यह बताना जरूरी है कि इनमें से दो तिहाई से भी अधिक मरीज बिना अस्पताल गए ही ठीक हो जाते हैं। पांच मरीजों में एक ही गंभीर रूप से संक्रमित होता है। ऐसे मरीजों में सांस लेने में परेशानी होने की स्थिति में अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत पड़ती है। बुजुर्ग तथा वैसे मरीज जो पहले से पुरानी बीमारियों जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, दमा या कैंसर से पीड़ित होते हैं, उनके गंभीर होने की संभावना ज्यादा होती है क्योंकि इनमें इम्युनिटी यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता की काफी कमी होती है। यहां यह बता देना भी जरूरी है कि किसी भी उम्र के वैसे मरीज जिन्हें बुखार कॉमन कोल्ड के साथ-साथ सांस लेने में परेशानी हो रही है या छाती में दर्द, बात करने में दिक्कत या उठने, बैठने, चलने-फिरने में परेशानी हो रही है तो तुरंत चिकित्सकीय जांच की जरूरत पड़ती है और अस्पताल में भर्ती कराना जरूरी होता है। किंतु जिन्हें मामूली बुखार या मामूली लक्षण हों उन्हें सामान्य चिकित्सा की जरूरत नहीं पड़ती है। ऐसे मरीजों को घर में दूसरे सदस्यों से अलग रहने तथा लक्षणों पर गौर करते रहने की सलाह दी जाती है। यदि कोई मरीज वैसे क्षेत्रों में रह रहा

है जहां मलेरिया या डेंगू का प्रकोप रहा हो तो उन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को मामूली बुखार होने की स्थिति में भी विशेष निगरानी की जरूरत पड़ती है। ऐसे लोगों के चेहरे पर मास्क तथा हाथ को साबुन-पानी से समय-समय पर धोते रहने तथा दूसरे लोगों से दूरी बना कर रहने की जरूरत होती है।

बच्चों तथा किशोरों में इसका संक्रमण

अब तक किए गए अनुसंधान से पता चला है कि बच्चों तथा किशोरों में इसका संक्रमण तथा फैलाव दूसरे वयस्कों तथा बुजुर्गों की तरह होता है। ऐसा देखा गया है कि बच्चों तथा किशोरों में अमूमन इसका संक्रमण गंभीर रूप धारण नहीं करता है लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में यह गंभीर रूप धारण कर सकता है। यदि इनमें लक्षण दिखने लगे तो दूसरे मरीजों के गाइड लाइन का पालन करते हुए सेल्फकोरंटाइन तथा सेल्फआइसोलेशन की जरूरत पड़ती है। ऐसी स्थिति में बच्चों तथा किशोरों को बुजुर्ग मरीजों से दूर रखना चाहिए।

संक्रमित मरीज के संपर्क में आने पर

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि इसका संक्रमण श्वसन तंत्र के माध्यम से होता है। अतः किसी कारणवश संक्रमित मरीजों के संपर्क में स्वस्थ आदमी के आने के बाद उसे हल्के में कदापि नहीं लेना चाहिए। यदि मलेरिया या डेंगू के कारण भी बुखार हो रहा हो तो भी चिकित्सा सलाह लेने में कोताही नहीं बरतनी चाहिए। ऐसे में मुंह को मास्क से ढकना चाहिए और दूसरे स्वस्थ लोगों से कम से कम एक मीटर की दूरी बरतनी चाहिए। घर में बिछावन, पर्दे, तौलिए, दरवाजों के हैंडिल, सीढ़ियों के रेलिंग को भी छूने से बचना चाहिए।

यदि आप मलेरिया या डेंगू प्रभावित क्षेत्र में नहीं रहते हों तो भी कई तरह की सावधानियां बरतने की जरूरत पड़ती है। ऐसी स्थिति में हल्का-सा भी लक्षण दिखे तो स्वयं को घर के दूसरे सदस्यों से अलग कर लेना चाहिए। यदि आपको लगता है कि आप कोविड-19 के मरीज के संपर्क में नहीं आए हैं लेकिन इस तरह के कुछ लक्षण दिखने लगे तो अपने आप को आइसोलेट कर अपने शारीरिक लक्षणों को लेकर सतर्क रहना चाहिए। यदि आप में किसी तरह के कोई लक्षण न भी दिखें और मरीज के संपर्क में आए हों तो खुद को 14 दिनों के लिए सेल्फ कोरंटीन कर लेना ही चाहिए।

सेल्फआइसोलेशन

कोरोना के इलाज तथा बचाव के लिए सेल्फआइसोलेशन जरूरी है। इससे मरीजों के परिवारों के साथ-साथ दूसरे लोगों में संक्रमण होने से बचाव होता है। यदि बुखार, खांसी या दूसरे लक्षण के संकेत दिखते हैं तो यह और भी जरूरी हो जाता है। ऐसी स्थिति में अपने आप को घर के अंदर ही रहने की जरूरत पड़ती है। घर में भी अकेले एक कमरे में कैद रहना चाहिए ताकि घर के अन्य सदस्यों के संपर्क से दूर रहें। ऐसे लोगों को ऑफिस या सार्वजनिक स्थानों में जाने से मनाही रहती है। यदि आप मलेरिया या डेंगू से संक्रमित क्षेत्रों में रह रहे हो तो इसकी जरूरत और भी ज्यादा हो जाती है। लक्षण दिखने की स्थिति में चिकित्सकीय सलाह लेने की जरूरत होती है। जब आप स्वास्थ्य लाभ ले रहे हों तो चेहरे पर मास्क लगाने के साथ-साथ दूसरे लोगों से कम से कम एक मीटर की दूरी रखना जरूरी है। दूसरे लोगों को छूने से भी बचना चाहिए। सार्वजनिक स्थानों में चीजों को छूना वर्जित होता है। लोगों के नजदीक जाने या हाथ मिलाने,गले मिलने या चूमने आदि से भी बचना चाहिए।

घर में जहां दूसरे सदस्य भी रह रहे हों विशेष सावधानी बरतने की जरूरत पड़ती है। ऐसे मरीजों को बड़े तथा हवादार घरों में रहना चाहिए तथा तौलिये,बिछावन,बाथरूम आदि अलग-अलग होने चाहिए। यदि रहने का कमरा एक ही हो तो दो बिस्तर कम से कम एक मीटर की दूरी पर हों। सेल्फआइसोलेशन में रखे मरीजों के लक्षणों में आ रहे परिवर्तनों पर गहन निगरानी रखने की जरूरत होती है। किसी भी तरह की परेशानी होने की स्थिति में चिकित्सकीय सेवा उपलब्ध कराना चाहिए। मरीजों को कम से कम 14 दिनों तक आइसोलेशन में रहना जरूरी होता है।

कोविड-19 का इलाज

दुर्भाग्य की बात है कि इस रोग का न तो अभी तक कोई इलाज निकल पाया है और न ही इससे बचाव के लिए कोई टीका ही बन पाया है। हालांकि दुनिया भर के चिकित्सा वैज्ञानिक इसके निर्माण में दिन-रात लगे हुए हैं और उम्मीद की जा रही है कि जल्द ही इसका टीका बन जायेगा। चूंकि यह विषाणुओं से होने वाला रोग है अतः इस पर एंटीबायोटिक्स का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हां, अस्पतालों में भर्ती होनेवाले गंभीर मरीजों को कई बार जीवाणुओं का संक्रमण होने या फिर उससे बचाव के लिए एंटीबायोटिक्स का इस्तेमाल किया जाता है।

कोरोना से बचाव

कोरोना वायरस से बचाव के लिए कई तरह की सावधानियां बरतने की जरूरत पड़ती है जैसे-

- एक दूसरे से कम से कम एक मीटर की दूरी बरतें।
- भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें।
- अपने हाथ से मुंह, नाक, आंखों आदि को छूने से बचें।
- थोड़े से भी लक्षण दिखने की स्थिति में घर में ही अपने आप को 14 दिनों के लिए सेल्फ आइसोलेशन करें।
- बुखार, सूखी खांसी या सांस लेने में परेशानी हो तो तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।
- हमेशा मुंह को मास्क से ढके रहें।

कोविड-19 का जीवन काल

घर के सामानों जैसे; बर्तन, दरवाजों के हैंडिल, सीढ़ियों की रेलिंग, फर्श आदि को साबुन-पानी या सैनिटाइजर से साफ कर देने से कोरोना वायरस के संक्रमण की संभावना समाप्त हो जाती है। घर के दूसरे सामानों को भी सामान्य घरेलू डिसइनफेक्टेंट से धो देने पर वायरस मर जाता है। वैसे सामान्य जानकारी के लिए बता दें कि प्लास्टिक तथा स्टेनलेस स्टील के बर्तनों में 72 घंटे, कॉपर पर 4 घंटे तथा कार्डबोर्ड पर 24 घंटे से अधिक समय तक जीवित नहीं रहता और अपने आप यह नष्ट हो जाता हैं। अध्ययन से यह भी पता चला है कि राशन के सामानों से इस वायरस का संक्रमण की कोई संभावना नहीं होती है। जहां तक फल तथा सब्जियों का सवाल है, बाजार से घर आने के बाद साफ पानी से अच्छी तरह धो लें। इससे संक्रमण की संभावना नहीं रहती है। अपने हाथों को भी साबुन-पानी से अच्छी तरह से धो लें। तथा चेहरे, मुंह, नाक, आंखोंआदि को छूने तथा दूसरे से हाथ मिलाने और गले मिलने से बचें।

अंत में इतना जरूर कहना है कि इस वायरस संक्रमण को लेकर ज्यादा घबराने या पैनिक होने की जरूरत नहीं है। यह रोग भी अन्य वायरल रोगों की ही तरह है और समय के साथ खुद ब खुद ठीक हो जाता है। सुखद बात यह है कि इस बीमारी में मरीजों के ठीक होने की संभावना काफी ज्यादा तथा मृत्यु दर अत्यधिक कम, मात्र 1.7 फीसदी ही है। हां, इतना जरूर है कि यह अत्यधिक संक्रामक रोग है और इसका फैलाव एक दूसरे में बहुत तेजी से होता है। अतः जबतक इसका इलाज तथा टीका नहीं मिल जाता है तब तक इससे बचाव ही एकमात्र उपाय है। इसके लिए चेहरे पर मास्क लगाना, हाथ को साबुन-पानी से धोना तथा शारीरिक दूरी बनाये रखना जरूरी है, तभी इससे बचा जा सकता है।

सेवानिवृत्त चिकित्सक
केंद्रीय चिकित्सालय, बीसीसीएल, धनबाद

कोरोना काल और हमारी जड़ें

- रोशन कुमार सिंह

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के इस संकट काल में एक तरफ जहाँ चारों ओर भय का वातावरण बना हुआ है, जो शायद स्वाभाविक है, वहीं दूसरी तरफ इस त्रासदी में बहुत सारी अभूतपूर्व घटनाएं भी घटित हो रही हैं। लोग इस एकांतवास को एक अवसर समझकर नये-नये अनुभवों द्वारा अपनी रचनात्मकता को निखार रहें हैं और नूतन सृजन भी कर रहें हैं। इसी बहाने लोगों को इस लॉकडाउन में अपने परिवार से फिर से जुड़ने का मौका भी मिल रहा है। परिणामस्वरूप इस लॉकडाउन में एक मानव, दूसरे मानव से जुड़ता नजर आ रहा है। अपनेपन और लगाव की एक सुखद भावना पनप रही है जो मानव का मानव के प्रति सहज प्रेम को दर्शाता है। अपनों के लिए प्रेम, समर्पण और चिंता दर्शाता है। हालांकि मनुष्य का यह प्राकृतिक स्वभाव तो सभी में विद्यमान है परंतु भागदौड़ के आर्थिक युग में हमने कहीं न कहीं इसे खो दिया था या यूं कहें कि औपचारिकता मात्र भर ही पूर्ति हो रही थी।

इस काल के दौरान एक शब्द भी आया जो था 'सामाजिक दूरी', जो शायद हम भारतवासी के मन-मस्तिष्क के शब्दकोश में कभी रहा ही नहीं। हम भारतवासी सदियों से बहुत ही सामाजिक और मिलनसार प्रवृत्ति के रहे हैं। हमारे यहां तो 'अतिथि देवो भवः' और 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी मान्यताएं रही हैं। हम लोग दुख की घड़ी में एक दूसरे के प्रति और ज्यादा सहयोग का भाव और सामाजिकता दिखाते हैं। जबकि इस कोरोना ने हमें उसके जन्म स्थान चीन की तरह हमें भी असामाजिक होने पर मजबूर कर दिया। बहरहाल हम तो इसे सामाजिक दूरी न मानकर शारीरिक दूरी ही मात्र मानते हैं। आज हम अपनी सुरक्षा की दृष्टि से और सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार भली-भांति इसका पालन भी कर रहे हैं। जो शायद उचित है और समय की मांग भी है। कोरोना काल में अगर 'सामाजिक दूरी' जैसे शब्द निर्माण हुआ है तो कुछ ऐसे भाव को भी पुनर्जीवित किया है जिसके लिए शायद कोई शब्द ही नहीं है या यदि हैं भी तो वह सब इस कोरोना काल में नए-नए से लगने लगे हैं। वो हैं प्रेम अपने देश के प्रति, अपने समाज के प्रति, अपने गाँव की मिट्टी और अपने परिवार के प्रति।

सर्वप्रथम हम यहाँ उनकी चर्चा करेंगे जो शुरू से ही हमारी सुरक्षा में तैनात हैं। परन्तु उनका मान-सम्मान हमारी नजर में कहीं खो सा गया था। हम उन्हें मात्र एक सरकारी कर्मचारी भर समझते थे। आज इस काल में हमें देखने को मिल रहा है कि किस प्रकार हरेक व्यक्ति उस पुलिस प्रशासन की चिंता कर रहा है और उसके निस्वार्थ भाव से किए गए सेवा कर्म के प्रति उसका आभार प्रकट कर रहा है। उसी प्रकार डॉक्टर, नर्स या चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े पारा मेडिकल स्टाफ आदि, जो आज देवदूत के रूप में हमारे सामने खड़े हैं, अपने प्राणों को दाँव पर लगाकर हमारे प्राणों की रक्षा कर रहें हैं। इसलिए शायद उनको कर्मवीर के उपाधि से सम्मानित किया जा रहा है। इस कार्य में अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएं भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी हैं। इस विकट और बदली हुई परिस्थिति में हमारा बीसीसीएल परिवार भी किसी भी रूप में कमतर नहीं हैं। इसने भी अपने स्तर से बहुत सारे सराहनीय कार्य किए हैं। चाहे आर्थिक रूप से सरकार को मदद करने की बात हो, चाहे जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री, मास्क और सैनेटाईजर उपलब्ध कराने की बात हो या स्थानीय स्तर पर सैनेटाइजेशन की या फिर कोविड-19 अस्पताल के निर्माण की बात हो, सब जगह बीसीसीएल ने तत्परता और सहयोग की भावना दिखाई है। कल तक हम समझते थे कि केवल तीनों सेनाएं ही हमारी रक्षा कर सकती है लेकिन अब हमें हमारी सोच में बदलाव की आवश्यकता है। देश का हर वह व्यक्ति जो दूसरे की जान बचाने में लगा हुआ है, वह भी देश का एक सच्चा सिपाही है। चाहे सफाई कर्मचारी की बातें करें या एंबुलेंस ड्राइवर की या उन गुमनाम नायकों की जो भूखों को खाना दे रहे हैं। इस तरह के अनेक लोग हैं और अनेक उदाहरण हैं और सरकार भी समय-समय पर उनके अच्छे लिए हौसला अफजाई व सराहना कर रही है। अगर हम छिटपुट घटनाओं को नजरंदाज कर दें तो हमारे कोरोना सिपाही इसमें सफल भी हो रहे हैं।

यह तो बात हुई उनकी जो गैर होकर भी अपने हैं इनको

शायद कभी हमने उस रूप में देखा ही नहीं या हमने कभी पहचानने का प्रयास ही नहीं किया। वहीं दूसरी तरफ अब हम उनकी बात करना चाहते हैं जो आपके अपने हैं और जो व्यवसाय, नौकरी और शिक्षा के लिए दूसरे प्रदेशों से लेकर विदेशों में रहने लगे थे। जिन्हें अपनी जन्म भूमि पर, अपने राज्य में और अपने देश में कुछ करना अच्छा ही नहीं लगता था। हर व्यक्ति जो गांव में रहता था वह शहर जाकर पढ़ना या रोजगार करना चाहता था। बेहतर जीवन की तलाश में एक राज्य का व्यक्ति दूसरे राज्य में पलायन कर चुका था और उससे भी एक कदम आगे लोग आर्थिक रूप से समर्थ या बड़ी डिग्री लेने की होड़ में विदेशों तक अपना पैर फैला चुके थे। जिससे हमारे समाज, हमारे गांव और हमारी मिट्टी को उनकी कमी महसूस हो रही थी। अपनी मिट्टी में रहकर एक भ्रम उनके अंदर घर कर गया था कि उनका यहां कुछ नहीं हो सकता। वह ना अच्छी शिक्षा ग्रहण कर पाएंगे, ना अच्छा रोजगार ही कर पाएंगे और उनमें से कुछ लोगों को तो अपनी मिट्टी से नफरत भी होने लगी थी और कुछ लोगों के लिए हमारे देश में डर का माहौल बन गया था। परंतु इस कोरोना काल में वही लोग अपने घर वापसी के लिए कितने लालायित और भावुक हैं, जो उनके चेहरे पर आज देखने को मिल रहा है। उनका अपने देश, अपनी मिट्टी के प्रति भावुक होना सहज है और स्वाभाविक भी है। आज हर वह व्यक्ति जो दूसरे प्रदेशों में रहता है या विदेशों में रह रहा है, अपने परिवार के पास आना चाहता है। सभी अपनी जड़ों से जुड़ना चाहते हैं। यह बहुत ही भावनात्मक दृश्य है। सरकारें इस दिशा में प्रयास भी कर रही है। कुछ मजदूरों और विद्यार्थियों को तो मेडिकल प्रोटोकॉल का पालन करते हुए उन्हें गंतव्य स्थान तक पहुंचा भी दिया गया है। आज जिनकी घर वापसी हुई है, यदि उन लोगों को देखते हैं एवं उनसे बातें करते हैं तो हम पाते हैं कि इस संकट के दिनों में उन्होंने अपने घर-परिवार को कितना याद किया और किसी भी कीमत पर अपने घर लौट जाना चाहते थे। चाहे दोबारा वहां उन्हें पढ़ने का मौका मिले चाहे ना मिले, चाहे उन्हें वहां दोबारा नौकरी मिले या ना मिले। इसकी उन्हें कोई परवाह नहीं, उन्हें तो बस परिवार से मिलना था। उसे देश की अर्थव्यवस्था से क्या मतलब, उसके आने से कल-कारखानों का क्या होगा, इसकी उसे चिंता नहीं, वह तो गृहप्रेम में बावला हो गया है। स्वस्थ हो या अस्वस्थ हो बस उन्हें घर जाना था। गृहप्रेम देखिए कि दिन रात का सुकून छिन गया था। उनमें से कुछ लोग तनाव ग्रस्त भी हो गए थे। जिसका परिणाम हुआ कि कुछ लोग पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर की दूरी तय करने लगे। जबकि उन्हें ज्ञात है कि यह वैश्विक महामारी है, हमारा गांव-घर भी इससे अछूता नहीं है। फिर भी उन्हें तो बस अपने घर जाना था...बस अपने घर।

कुल मिलाकर इस दौरान जो हमने अपने जीवन मूल्य, प्रेम, समर्पण और संस्कार खो दिए थे, अपनी जन्मभूमि को और दूसरे का आदर-सम्मान करना भूल गये थे उनमें इस कोरोना काल में बदलाव आया है। लोगों का अपने देश को, गाँव को और अपने परिवार को देखने का नजरिया बदला है और हमें हमारी जड़ों से जुड़ने का अच्छा अवसर मिला है। एक और बात समझ में आती है कि मुसीबतें भी कभी-कभी लोगों को नजदीक लाती हैं। अंत में कहना चाहता हूं कि अपना देश, अपना देश होता है और अपना घर, अपना घर होता है।

कार्मिक विभाग
सिजुआ क्षेत्रीय कार्यालय
बीसीसीएल

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव

- हर्ष रंजन

आने वाले समय में अगर आपको यह देखने को मिले कि कारें बिना ड्राइवर के चल रही हैं, आपके घर में प्रवेश करते ही घर के बल्ब एवं ट्यूबलाईट्स स्वतः ही जल उठते हैं और घर से निकलते ही स्वतः बुझ जाते हैं, टी.वी. चैनल आपकी मात्र कल्पना या इशारों से ही बदल जाते हैं, किसान घर बैठे अपने किसी दूर के खेत में दवाइयों का छिड़काव कर रहा है, रोबोट्स को भी नागरिकता दी जा रही है और युद्ध के मैदान में सेनाओं की जगह रोबोट्स युद्ध कर रहे हैं तो आपको कोई आश्चर्य नहीं होनी चाहिए। यह कोई जादू नहीं, बल्कि विज्ञान है।

इस विज्ञान का नाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) यानी कृत्रिम बौद्धिकता है। इस तकनीक ने लगभग सभी क्षेत्रों में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है और इससे कंप्यूटर के क्षेत्र में एक नयी क्रांति सी आ गई है। इस तकनीक के आ जाने से कई क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई है। भारत सरकार द्वारा हेल्थकेयर, कृषि, शिक्षा, स्मार्ट सिटीज, इंफ्रास्ट्रक्चर, स्मार्ट मोबिलिटी एवं ट्रांसपोर्टेशन आदि जैसे नौ महत्वपूर्ण क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग प्रमुखता से किया जा रहा है।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के माध्यम से नये आविष्कारों को बढ़ावा देने और देश के सामाजिक मुद्दों को समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया जा रहा है। परिणामस्वरूप, भारत सरकार इस तकनीक को बढ़ावा देने के लिए "सेंटर ऑफ एक्सेलेंस (CoE)" की स्थापना हेतु कई कदम उठा रही है। इसके अलावा, सरकार द्वारा क्वांटम कम्प्यूटिंग के लिए ₹ 8000 करोड़ की राशि आवंटित की गयी है, जिससे एआई अनुसंधान एवं विकास को गति मिलेगी।

भारत दुनिया के शीर्ष 3 सबसे बड़े स्टार्टअप हब में से एक है। प्रौद्योगिकी आधारित नये भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए इस क्षेत्र में काम कर रहे अनुसंधानकर्ताओं के बीच परस्पर संपर्क स्थापित करने तथा उन्हें प्रेरित करने के उद्देश्य से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर एक राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा इसे सुलभ बनाने और एक तंत्र को विकसित करने के लिए कई समितियों का गठन किया गया है, जो एआई को प्रोत्साहित एवं इसका निगमन करेगा। इस क्षेत्र में लगे कार्यबल को बढ़ावा देने तथा उनके कौशल विकास और नैतिक दिशानिर्देशों को सुनिश्चित करने के प्रमुख दायित्व इन समितियों को सौंपे गए हैं, जो इस क्षेत्र में हो रहे विकास एवं विभिन्न गतिविधियों की निगरानी कर रही हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के माध्यम से कुछ प्रमुख क्षेत्रों में हो रहे क्रांतिकारी परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

कृषि: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) खाद्य क्रांति लाने तथा भोजन की बढ़ती मांग को पूरा करने में बेहद उपयोगी साबित हो रहा है। एआई के माध्यम से फसलों के पिछले आंकड़ों के साथ-साथ मिट्टी के प्रकार, मानसून की तारीखों, फसलों की उपलब्धता आदि जैसे जटिल आंकड़ों का पता लगाया जा सकता है और इसके

अलावा, एआई के माध्यम से फसल की निगरानी करने की दिशा में भी अनुसंधान चल रहा है। इंडस्ट्री 4.0 प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए उपग्रहों एवं ड्रोन के माध्यम से फसलों के आंकड़े एकत्रित करने के लिए एक निगरानी प्रणाली को भी डिज़ाइन किया जा सकता है और इसके डेटा का विश्लेषण किया जा सकता है, ताकि बेहतर उपज प्राप्त की जा सके। कृषि के क्षेत्र में इस तकनीक के प्रयोग की अपार संभावनाओं को देखते हुए बहुत सारे शोध किए जा रहे हैं।

हेल्थकेयर: आजादी के बाद से ही भारत हेल्थकेयर की चुनौतियों

से जूझ रहा है। इस क्षेत्र में भी एआई का प्रयोग काफी प्रभावकारी तरीके से किया जा सकता है। इसके माध्यम से लोगों तक बहुत ही आसानी से स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुंचाया जा सकता है। विशेषकर उन ग्रामीण क्षेत्रों में जो सड़क-मार्ग से नहीं जुड़े हैं और जहां स्वास्थ्य कर्मियों की पहुंच सीमित हैं। इस तकनीक के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का कायाकल्प किया जा सकता है।

तथा इसके आधार पर फसलों का सही चयन किया जा सकता है।

इसके माध्यम से सेल्फलर्निंग रेडियोलॉजी एवं पैथोलॉजी सिस्टम को भी डिजाइन किया जा सकता है, जो मानवीय हस्तक्षेप के बिना प्रारंभिक रिपोर्ट तैयार कर सकें। अस्पतालों में मरीजों एवं स्वास्थ्यकर्मियों को पहनने योग्य स्वास्थ्य ट्रैकिंग उपकरणों को उपलब्ध कराकर, मरीजों के लिए त्रुटि-रहित स्वास्थ्य-जांच संभव हो सकती है।

शिक्षा एवं कौशल विकास: यह कहना गलत नहीं होगा कि एआई आने वाले वर्षों में शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बदल कर रख देगी। एआई-आधारित तकनीक के माध्यम से छात्रों के परिणामों

का मूल्यांकन बेहद ही सटीकता के साथ किया जा सकता है, जिससे काफी हद तक सरकारी संसाधनों एवं धन की बचत होगी। इस प्रकार शिक्षा की लागत में भारी कमी आएगी और 'सभी के लिए शिक्षा' एक वास्तविकता बन सकती है। एआई तकनीक के माध्यम से जनउपयोगी संसाधनों तक सभी की पहुंच समान रूप से हो सकती है और शिक्षक अपने छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे सकते हैं। पाठ्य पुस्तकों एवं पाठ्यक्रमों को छात्रों की रुचियों एवं क्षमताओं के अनुसार विशिष्ट रूप से तैयार किया जा सकता है।

पर्यावरण: हम सभी जानते हैं कि वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण आदि रोगों के विस्तार के प्रमुख कारक एवं घटक हैं, जो आमजन के जीवन को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। एआई सेंसर एवं प्रतिक्रिया तंत्र का उपयोग करके प्रदूषण के स्तर का

आकलन किया जा सकता है और प्रदूषण के स्तर को बेहद प्रभावी तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, इस तकनीक के माध्यम से बाढ़, चक्रवात आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी सटीकता के साथ की जा सकती है और संबंधित एजेंसियों को सचेत किया जा सकता है, ताकि समय रहते आवश्यक कदम उठाए जा सकें और होने वाले नुकसान को न्यूनतम किया जा सके।

राष्ट्रीय सुरक्षा: भारत जैसे सामरिक दृष्टि से संवेदनशील देश के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा एक बहुत ही गंभीर मुद्दा है और इस क्षेत्र में भी एआई तकनीक काफी अहम हो सकती है। इस तकनीक का उपयोग स्वायत्त निगरानी तथा युद्ध प्रणालियों के डिज़ाइन में किया जा सकता है, जिससे भारतीय सेना सैन्य क्षेत्रों की निगरानी और भी बेहतर तरीके से करने में सक्षम हो जाएगी। इस प्रकार हमारी सेना किसी भी संदिग्ध गतिविधियों के प्रति पहले से सचेत होकर, शत्रु को करारा जवाब दे सकती है।

भारतीय सेना की शक्ति को बढ़ाने के लिए एआई-रोबोटिक्स आधारित हथियारों को डिज़ाइन किया जा सकता है, ताकि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरों से निडर होकर निपट सकें। इसके अतिरिक्त, साइबर हमलों से निपटने और जवाबी कार्रवाई के लिए एआई आधारित साइबर हमला बचाव प्रणाली को भी विकसित किया जा सकता है।

यह अवश्यंभावी है कि आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) हमारे जीवन का अभिन्न अंग होगा, जो पूरी तरह से दुनिया को बदल कर रख देगा। मानव जीवन बेहद सुविधा संपन्न हो जाएगा। हमें इस तकनीक का खुले मन से स्वागत करना चाहिए। इस क्षेत्र में काम कर रहे वैज्ञानिकों एवं नियामक एजेंसियों को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि यह तकनीक मानव सभ्यता के लिए केवल वरदान ही साबित हो और इसका दुरूपयोग न हो अन्यथा इतिहास गवाह है कि गलत हाथों में पड़कर, विज्ञान अभिशाप भी बन जाता है।

सुपुत्र : श्रीमती रिंकू दुबे
राजभाषा विभाग,
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड. धनबाद

राष्ट्रीय एकता और हिंदी

- राजेन्द्र राम

इसमें कोई शक नहीं कि हिंदी भारत में एक बड़े भू-भाग की भाषा है। हिंदी को राष्ट्रभाषा कहकर ही गांधी जी ने 1918 में अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई थी। गांधी जी से भी पहले स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदी में 'सत्यार्थ प्रकाश' में बतलाने का प्रयास किया था कि भारत में कोई भी आंदोलन हिंदी के बिना नहीं चल सकता। उससे भी पहले भक्ति आंदोलन के कवियों ने हिंदी को अपनी तरह से संवारा और इस्तेमाल किया था।

कबीर, मीरा और रैदास की पंक्तियां बंगाल से लेकर राजस्थान, गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र और हैदराबाद तक गुनगुनाई जाती थीं। आज से सैंकड़ों वर्षों पूर्व दक्षिण के आचार्यों ने हिंदी को अपनाकर जन-जन तक अपनी बात पहुंचाई। वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य आदि हिंदी के राष्ट्रीय महत्व को समझ कर ही इसे व्यवहार में लाए।

फिर क्या कारण रहा कि हमारी हिंदी जो किसानों और कारीगरों की जुबान थी बुनकरों, कुम्हारों, दर्जियों, मोचियों की जुबान थी, जो कबीर, रैदास, मीरा, रसखान, तुलसी और सूर जैसे फटेहाल और मेहनतकश लोगों की जुबान थी, 19वीं - 20वीं सदी आते-आते उस हिंदी की प्रकृति और प्रवृत्ति बदल जाती है। जो हिंदी फारसी से लेकर कैथी और गुरुमुखी लिपियों में लिखी जाती थी, आग्रह हुआ कि केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाए।

निश्चित रूप से यह स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए कि कुछ चूक की वजह से हमने खुद को गालिब और मीर से जुदा कर लिया। परवर्तियों ने तो हिंदी को बोलियों से भी दूर कर लिया। हिंदी तत्सम होने लगी। तद्भव, देशज और विदेशज शब्द घटते चले गए। हिंदी पर तत्सम समाज का प्रभाव भी गहराने लगा। जो हिंदी समानता व मानवीयता और करुणा के तत्वों, विचारों से भरी पड़ी थी, अब वर्चस्ववादियों की प्रचारक बनकर सिमटने लगी।

हम यदि सोचते हैं कि किसी जुबान का विरोध कर ही हम अपनी जुबान का विकास कर सकते हैं तब यह शायद सही नहीं है। अंग्रेजी या उर्दू या किसी भी अन्य जुबान का विरोध न कर हम अपनी भाषा को संवारने की चिंता करें तो यह ज्यादा सही होगा।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई भी समाज अपनी संस्कृति और अस्मिता को सुरक्षित रख पाता है। यही कारण रहा है कि भाषा ही सबसे पहले अस्मिताओं और संस्कृतियों के टकरावों का शिकार हुई हैं। हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है। उसे कभी राजनीतिक अवसरवादियों ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहा तो कभी कुछ अन्य शरारती तत्वों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इसका दुरुपयोग करना चाहा। राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य व बदलते समय में हिंदी की व्यापकता और उसकी राष्ट्रीय समन्वयकारी छवि को दृष्टिगत रखते हुए यह संदर्भ जरूरी है कि बी.बी.सी. की एक रिपोर्ट के अनुसार तमिलनाडु में हिंदी को लेकर जो विरोध होता रहता है उसका प्रारंभ 1937 में ही हो गया था जब राजगोपालचारी की सरकार ने मद्रास प्रांत में हिंदी को लाने का समर्थन किया था। 1967 के चुनाव में डी.एम.के. के जीतने का एक प्रमुख कारण हिंदी विरोध भी था। सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह है कि तमिलनाडु में हिंदी का विरोध कर उसे राजनीतिक मुद्दा बनाया जाता है। इसके पीछे तमिल की उतनी नहीं, जितनी अंग्रेजी की चिंता है। यह वही तमिल प्रदेश है जहां राष्ट्रीय स्वाधीनता

आंदोलन के समय महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के लिए आंदोलन का प्रारंभ किया था। गांधी जी गुजरात से थे। उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं गुजराती थी। फिर भी उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का समर्थन किया क्योंकि वे जानते थे कि हिंदी जन-जन की भाषा है। गांधी जी यह बात अच्छी तरह जानते थे कि तमिलनाडु में हिंदी का विरोध राजनीतिक कारणों से था इसलिए दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए दक्षिण को चुना और 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की।

एक बार कलकत्ता (अब कोलकाता) में स्वामी दयानंद सरस्वती संस्कृत में व्याख्यान दे रहे थे तब केशवचंद्र सेन ने उनसे आग्रह किया कि वे हिंदी में व्याख्यान दें जिससे उनकी बात सबकी समझ में आए। इससे बंगाल में हिंदी की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

महाराष्ट्र का इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है कि मराठों की आन बान और शान शिवाजी के दरबार में भी हिंदी को विशेष स्थान प्राप्त था। यहां तक कि उनके पुत्र सम्भा जी तो स्वयं हिंदी के श्रेष्ठ कवि थे। इसके साथ ही यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि भारतीय हिंदी फिल्म उद्योग का गढ़ भी मुम्बई ही है।

हर भाषा का अपना-अपना अस्तित्व है और अलग महत्त्व भी, लेकिन जब हम राष्ट्रीय स्तर पर किसी एक भाषा की बात करते हैं तो वह हिंदी ही है। हिंदी न केवल भावात्मक रूप से हमें परस्पर जोड़ती है बल्कि संपूर्ण देशवासियों को एकता के सूत्र में भी बांधती है। यह बात भी नहीं भूली जानी चाहिए कि हिंदी मात्र एक भाषा नहीं बल्कि विविध बोलियों का समुच्चय है और ये बोलियां किसी एक क्षेत्र विशेष, स्थान विशेष या राज्य विशेष से नहीं ली गई

है बल्कि ये तो विभिन्न प्रांतों से आई हैंजिन्हें हिंदी ने बिना किसी भेदभाव के अपने में समाहित कर लिया है। इसी कारण यह बहुक्षेत्रीय भाषा कही जाती है।

किसी भी बहु भाषा-भाषी समाज या देश में कोई न कोई भाषा ऐसी तो होती है जो संप्रेषण के धरातल पर संपर्क भाषा का काम करती है। इसे लिंगुआफ्रेंका (Lingua Frenca) के नाम से जाना जाता है। प्रायः यह संपर्क भाषा मानक भाषा के रूप में प्रयुक्त नहीं होती है और उसमें क्षेत्रीय और प्रांतीय भाषाओं और बोलियों के पुट शामिल रहता है। उदाहरण के लिए भारत के अधिकांश प्रांतों में हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में साधारण और रोजमर्रा के जीवन में प्रयुक्त होती है। यह अवश्य है कि राजस्थान की संपर्क भाषा हिंदी और हिमाचल की संपर्क भाषा हिंदी एवं बंगलुरू व मुम्बई की संपर्क भाषा हिंदी की अपनी-अपनी कई विशेषताएं हैं। जैसे जल अपना रूप बर्तन के हिसाब से बदल लेता है, गोल बर्तन में गोल, ऊंचे-लंबे बर्तन में ऊंचा-लंबा आदि-आदि। इसी प्रकार संपर्क भाषा हिंदी हर प्रांत और प्रदेश में उस प्रांत की मुख्य भाषा के अनुरूप ढल जाती है और कुछ नई छटा लिए होती है। यह इस भाषा के लचीलेपन की विशेषता के कारण है।

हमारे संविधान के अनुच्छेद 343 में दर्ज है कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी हमारी राजभाषा होगी। यह तो राजभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति की बात हुई लेकिन जहां तक राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का सवाल है स्पष्ट उल्लेख नहीं है। डॉ. यू. आर. अनंतमूर्ति ने एक बार कहा था कि भाषा को राष्ट्रीय बनाना है तो इसे लिपि के बंधन से मुक्त करना होगा। जब संस्कृत संपूर्ण भारत के पढ़े-लिखे लोगों की संपर्क भाषा थी तो सभी भाषाओं में संस्कृत अलग-अलग लिपियों में लिखी गई। संस्कृत की व्यापकता और उसके अखिल भारतीय होने का यह एक बड़ा कारण रहा होगा। अगर हिंदी भी कन्नड़, तमिल, तेलगू, मलयालम, बांग्ला, पंजाबी की लिपियों में लिखी जाए तो इससे हिंदी का विस्तार ही होगा। तब वह असल में राष्ट्रभाषा बन पाएगी। देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को फारसी लिपि में हिंदी पढ़ते देखा गया। सोनिया गांधी रोमन लिपि में हिंदी पढ़ती है, देवगौड़ा जब प्रधानमंत्री थे तो उनका भाषण कन्नड़ लिपि में लिखा होता था और वे हिंदी पढ़ रहे होते थे। इसके अलावा आज की हिंदी को ऐसा बनाना होगा जिससे युवा पीढ़ी आसानी से जुड़ सके, चाहे इस प्रक्रिया में भाषा की शुद्धता कम हो जाए मगर इससे साहित्य प्रासंगिक बनेगा और अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकेगा।

बोर्ड सचिवालय
कोयला भवन, बीसीसीएल

अगर किसी चीज़ को पाना है तो उसे शिद्दत से चाहो

- सीताराम गुप्ता

रामचरितमानस में एक स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं, ***"जेहि का जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलहिं न कछु सन्देहू।"*** अर्थात जिसको जिस चीज़ से सच्चा प्रेम होता है उसको वह चीज़ अवश्य मिल जाती है इसमें संदेह नहीं। कहने का तात्पर्य यही है कि सच्चे मन से चाही गई वस्तु अवश्य प्राप्त होती है। प्रेम से हम किसी को पा सकते हैं, अपना बना सकते हैं। इस बात को हम दूसरी तरह से भी कह सकते हैं कि हम जो चीज़ भी पाना चाहते हैं उसे मन की गहराई से अथवा सच्चे मन से चाहो। अगर हम सच्चे मन से किसी चीज़ को चाहेंगे तो वह अवश्य ही उपलब्ध हो जाएगी। प्रेम सच्चा हो तो मिलन में देर नहीं लगती। हमारी सच्ची चाहत ही वस्तुओं अथवा परिस्थितियों को आकर्षित कर उन्हें सुलभ बनाती है। उत्तम स्वास्थ्य अथवा प्रसन्नता भी इसका अपवाद नहीं। यदि हम अच्छे स्वास्थ्य व प्रसन्नता की कामना करेंगे तो परिस्थितियां अच्छे स्वास्थ्य व प्रसन्नता के अनुकूल होकर हमारी इच्छापूर्ति में सहायक हो जाएंगी।

फिल्म ओम शांति ओम में शाहरुख़ खान अत्यंत उत्साहपूर्वक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आशावादी लहजे में एक डायलॉग बार-बार दोहराते हैं और वो डायलॉग है कि किसी चीज़ को अगर शिद्दत से चाहो तो सारी क़ायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है। जर्मन भाषी चेक लेखक **फ्रांज़ काफ्का** भी लिखते हैं कि - *उस चीज़ में शिद्दत से यक़ीन करना, जो है नहीं, उस चीज़ को बनाना* है। सिर्फ वही चीज़ें नहीं बन पातीं जिन्हें हम शिद्दत से नहीं चाहते। स्पष्ट है कि जैसी चाहत होगी वैसी ही उपलब्धि होगी। जीवन को सँवारना है तो अच्छी सोच अथवा शुभ संकल्प अनिवार्य हैं। यदि हमारी इच्छाएं सात्विक नहीं हैं तो परिणाम भी सात्विक नहीं होंगे। इसी कारण से कई व्यक्ति तथाकथित पुरुषार्थ तो करते हैं लेकिन फिर भी सफलता से कोसों दूर रहते हैं। तभी तो कामना की गई है कि मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो *'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु'*।

ब्राजील निवासी पुर्तगाली भाषा के मशहूर लेखक **पाओलो कोएलो** अपने चर्चित उपन्यास **द अल्केमिस्ट** में कहते हैं कि जब आप दिल से कुछ चाहते हैं तो सारी क़ायनात उसे आपसे मिलाने के लिए साज़िश रचती है। चाणक्य ने भी कहा है, *'यथाबीजं तथा निष्पतिः'* अर्थात जैसे कारण वैसा ही कार्य। कारण कार्य सिद्धांत। इसको दूसरी तरह भी समझा जा सकता है। आप काट नहीं सकते यदि आप बोते नहीं हैं। जिस प्रकार फसल पाने के लिए बीज बोना अनिवार्य शर्त है उसी तरह अन्य कुछ भी पाने के लिए उस चीज़ की चाहत अर्थात मन में इच्छा का बीजारोपण भी अनिवार्य है। जब हम कोई बीज बो देते हैं तो उससे पेड़ उगना स्वाभाविक है। बोने के बाद उसे उगने से रोकना असंभव है। बिल्कुल इसी तरह से विचार रूपी बीज को वास्तविकता में परिवर्तित होने से रोकना भी असंभव है। यदि किसी भी तरह से अच्छे विचार रूपी बीजों का मन में रोपण कर दें तो उसके परिणाम को कोई नहीं रोक पाएगा।

हम स्वयं के अच्छे होने का संकल्प कर लें तो हमारे अच्छे होने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। इच्छाएँ ही हमारा जीवन है, इच्छाओं से ही हमारे व्यक्तित्व का विकास है और इच्छाओं से ही समाज का निर्माण है। जीवन को सँवारना है तो इच्छाओं को सँवारना होगा। मन में उठने वाले हर भाव को देखना होगा। भावों को नियंत्रित करना होगा। ग़लत-सही का चुनाव करना होगा। अस्वस्थ भावों का त्याग करना होगा तथा स्वस्थ भाव धारा का चुनाव या निर्माण कर उसे पोषित करना होगा। उसे दूसरे दूषित भाव-बीजों से बचाना होगा। विरोधी भाव बीजों के भूकंप से रक्षित करना होगा।

मन में हर क्षण असंख्य भाव उत्पन्न होते रहते हैं, अनेक इच्छाएँ जन्म लेती रहती हैं। सबसे पहले सात्त्विक इच्छा का चयन करना है। मन में उठने वाले भावार्णव में से उत्कृष्ट भावों का चयन करना है। शांत-स्थिर अवस्था में बैठकर भावों का विश्लेषण करें तो सात्विक या उपयोगी भाव अथवा इच्छाएँ स्पष्ट हो जाती हैं। यदि इच्छाओं के जंजाल में से उपयोगी इच्छा या सात्विक भाव का चयन नहीं हो पाता तो मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक का सहारा ले। हम सब जानते हैं कि क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है। कहा गया है

कि शक्करखोरे को शक्कर और टक्करखोरे को टक्कर मिलती है। हम जो खाना चाहते हैं वही बाज़ार से ख़रीद कर लाते हैं। जो ख़रीद कर लाते हैं उसकी स्पष्ट छवि पहले से ही मन में निर्मित कर लेते हैं। यदि ऐसा नहीं करते तो ग़लत चीज़ की खरीददारी की संभावना बढ़ जाती है। हम शक्करखोरे बनने की कामना करें न कि टक्करखोरे बनने की। यही चयन हमारी नियति निर्धारित कर हमें योग्य-अयोग्य अथवा सफल-असफल बनाता है।

जिन्हें हम संकल्प कहते हैं वे यहीं से प्रारंभ होते हैं। किसी कार्य को करने की दृढ़ इच्छा अथवा शिद्दत से चाहत ही संकल्प है। किसी भाव का चुनाव कर लेना इच्छा की तीव्रता के फलस्वरूप ही संभव है। मुझे ये कार्य करना ही है। मुझे ये प्राप्त करना ही है। मुझे अच्छा इंसान बनना ही है। मुझे इन गुणों का विकास करना ही है। ये सब हमारे भाव ही हैं जो चुनाव और इच्छा की तीव्रता, दृढ़ता या शिद्दत से चाहने के कारण संकल्प का रूप ले लेते हैं। संकल्प का अर्थ ही है कि हमने इच्छा का चुनाव या उद्देश्य को स्पष्ट कर लिया है अब उसे पाना शेष है जिसके लिए प्रयास करना है। इसे हम गोल सैटिंग भी कह सकते हैं। किसी काम को सोच-समझ कर करना। करने वाले वास्तव में हम नहीं हैं। हम तो मात्र सोच सकते हैं। सोच अपेक्षित अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करके हमसे वो सब करवाती है जो हमने चाहा था। हम विचार कर सकते हैं। विचार के साथ ही क्रियान्वयन की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। हम विचार को नियंत्रित कर सकते हैं, उसे प्रभावी बना सकते हैं, नकारात्मक भाव को हटाकर उसके स्थान पर सकारात्मक भाव ला सकते हैं तथा भावों का पोषण कर इच्छित वस्तु को प्राप्त कर सकते हैं।

इच्छाओं के द्वारा ही भौतिक जगत की सृष्टि संभव है। इच्छाएँ स्लॉट मशीन में डालने वाले सिक्के की तरह कार्य करती हैं। सिक्का मशीन में सामान बाहर। इच्छा मन में, सृष्टि भौतिक जगत में। कहा गया है कि पुरुषार्थ के बिना कार्य सिद्ध नहीं हो सकता लेकिन पुरुषार्थ भी हम किसी इच्छा के वशीभूत होकर ही तो करते हैं। इच्छा के बिना पुरुषार्थ भी असंभव है। इच्छाएँ कीजिए, तभी कुछ प्राप्त कर पाएंगे। कुछ बोइए, तभी काट पाएंगे, यही शाश्वत नियम है। शिद्दत से चाहने पर सब कुछ मिल जाएगा इसमें संदेह नहीं। अच्छा और बुरा दोनों संभव हैं। ग़लत कार्य अथवा बुराई भी सोच का ही परिणाम होता है। ग़लत सोच का परिणाम। यदि ग़लत करने से बचना है तो ये भी शिद्दत से चाहो कि मैं केवल अच्छे की कामना करूँ।

ए. डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034,

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा

- रश्मि चौरसिया

राजभाषा पखवाड़ा-2019 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत रचना

आज कल आए दिन महिलाओं पर हिंसा के संबंध में अनेक घटनाएं देखने-सुनने को मिल जाती है। अखबार की सुर्खियां घरेलू हिंसा की घटनाओं से पटी रहती है। थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन द्वारा किए गए एक सर्वे के अनुसार महिलाओं के प्रति यौन हिंसा, मानव तस्करी और यौन व्यापार में ढकेले जाने के आधार पर भारत को महिलाओं के लिए असुरक्षित देश बताया गया है। इस सर्वे में असुरक्षित देशों की सूची में भारत प्रथम स्थान पर है। जानकारों के अनुसार महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा के मामले में भारत तृतीय स्थान पर है। हर जगह चाहे वो घर हो, ऑफिस हो, सार्वजनिक स्थान हो सभी जगह महिलाओं का उत्पीड़न देखने को मिल जाता है। दो से 80 साल तक की महिलाओं के साथ बलात्कार, यौन शोषण रोज की घटनाएँ हो गई हैं। छेड़छाड़ तो हर दिन की सामान्य घटना है। बड़ी शर्म की बात है कि जिस देश में नारी को देवी तुल्यसम्मान मिला है, उसी देश में रोज ना जाने कितनी महिलाएं पुरुषों द्वारा शोषित की जा रहीं हैं, कुचली जा रहीं हैं। पुरुषों को जन्म देने वाली नारी पुरुषों द्वारा ही शोषित हो रही है। महिलाओं की मार्मिकता व्यक्त करती राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां बरबस ही याद आ जाती है

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

ये भाव आज की नारी स्थिति पर कितने सटीक बैठते हैं। ये आज की बात नहीं, सदियों से महिलाओं का शोषण हो रहा है, जिसमें घरेलू हिंसा प्रमुख है, कभी पति द्वारा, कभी पिता और कभी भाई द्वारा तो कभी समाज द्वारा महिलाएं शोषित होती रहीं हैं।

महिलाओं के प्रति व्याप्त हिंसा को अगर श्रेणीबद्ध करने का प्रयास करें तो हम कह सकते हैं कि हिंसा और शोषण की प्रवृत्ति के आधार पर हमारे समाज और घरों में महिलाओं के प्रति मुख्य रूप से निम्नलिखित चार प्रकार की हिंसाओं का उल्लेख किया जा सकता है।

शारीरिक एवं मानसिक हिंसा: किसी भी महिला अथवा बच्चियों को मारना-पीटना, उन्हें धक्का देना और शारीरिक चोट पहुंचाना आदि शारीरिक और मानसिक शोषण के अंतर्गत आता है।

भावनात्मक हिंसा:महिलाओं को गाली देना, अपशब्द कहना, उनके चेहरे को लेकर अपशब्द कहना, दहेज के लिए प्रताड़ित करना या इसके लिए उनके परिवार को परेशान करना भावनात्मक हिंसा की श्रेणी में आ सकता है।

यौन हिंसा: किसी भी महिला के पति द्वारा उसकी मर्जी के खिलाफ संबंध बनाना या इसके लिए जोर आजमाइश करना, बलात्कार करना, अश्लील साहित्य पढ़ने या अश्लील तस्वीरें देखने के लिए विवश करना, बुरी नियत से छूना अथवा घूरना आदि यौन हिंसा अथवा यौन दुर्व्यवहार के अंतर्गत आता है।

आर्थिक हिंसा: इसके अंतर्गत महिलाओं या बच्चियों को आवश्यक और जरूरी कार्य के लिए भी खर्च न देना या उसे बाहर काम करने की आजादी ना देना अथवा उसके द्वारा कमाये गये पैसों पर भी अपना हक जमाना आर्थिक हिंसा के अंतर्गत रखा जा सकता है।

उपर्युक्त के अलावा भी हमारे समाज में महिलाओं के प्रति तमाम दुर्व्यवहारों को देखा जा सकता है; जैसे लिंग भेद करना, गर्भस्थलिंग का पता लगाना, कन्या भ्रूणहत्या, बच्चियों को मन के अनुरूप पहनावे पर प्रतिबंध लगाना, बाहर काम करने पर रोक लगाना, उनकी इच्छा के विरूद्ध शादी करना इत्यादि भी तो घरेलू हिंसा के ही विविध रूप हैं। घरेलू-हिंसा एक शादी-शुदा महिला पर किए गए अत्याचार ही नहीं बल्कि किसी भी महिला पर किया गया शोषण भी घरेलू हिंसा है। फिर चाहे वो पिता-पुत्री के बीच हो या भाई-बहन या मां-बेटा-बेटी के बीच या पति-पत्नी, सास-बहु या ननद-भाभी आदि किसी के साथ हो रही शोषण की घटनाएं हों।

इस हिंसा के मूल में देखें तो इसका सबसे बड़ा कारण हमारे समाज को पुरुष प्रधान होना ही प्रतीत होता है। यहीं से पुरुष को मजबूत और लड़की को कमजोर समझा जाता है। घर के वातावरण में सदियों से व्याप्त लिंग भेद की परम्परा भी इस हिंसा का एक कारण है। इसी व्यवस्था के कारण पुरुष स्वयं को शक्तिशाली और महिला को

नाज़ुक और कमजोर समझता है।चाहे महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उससे दो कदम आगे भी हों तब भी उसे पुरुष के मुकाबले कमतर ही समझा जाता है। आज कोई भी क्षेत्र हो,चाहे खेल जगत, तकनीकी क्षेत्र हो या चिकित्सा, राजनीति आदि हर जगह महिलाएं पुरुषों को टक्कर दे रही हैं और दंभी पुरुष समाज इन महिलाओं की प्रसिद्धि को पचा नहीं पा रहा है। परिणामतः वो महिलाओं को झुकने के लिए उन्हें कमजोर बनाने के लिए उन पर रात दिन शोषण और अत्याचार कर रहा है।

अगर हम महिला-हिंसा से मुक्त भारत बनाना चाहते है तो सबसे पहले हम महिलाओं को इस शोषण के खिलाफ आवाज उठानी होगी और संगठित होकर इसके प्रति खड़ा होना होगा। महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना पड़ेगा। अगर महिलाएं अपनी सुरक्षा के प्रति खुद दृढ़ संकल्पित होंगी तो वो खुद ही सबसे प्रभावशाली उपाय होंगी। क्योंकि बहुधा ऐसा देखा जाता है कि महिलाएं घरेलू हिंसा को लोक-लाज और समाज की बदनामी के डर से चुप-चाप सहती रहती हैं... पर अब और नहीं।

भारत सरकार द्वारा महिलाओं के प्रति जारी घरेलू हिंसा से निपटने के लिए समय-समय पर अनेक कानूनी उपाय किए जाते रहे हैं। इस संबंध में एक अधिनियम बनाकर महिलाओं को कई नए अधिकार दिये गये। भारत सरकार द्वारा 2005 में घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम लाया गया जो 26 अक्टूबर 2006 से देश में लागू हुआ। इस अधिनियम का उद्देश्य घरेलू हिंसा झेल रही महिलाओं को तत्काल और आपात कालीन राहत दिलाना था। भारतीय दंड संहिता की धारा 498 A के तहत दोषियों को दंडित करने का प्रावधान है। घरेलू-हिंसा अधिनियम के तहत महिलाओं को रहने के लिए घर दिलाना और वेतन-भत्ता देना है। इस कानून के लागू होने का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि जो महिलाएं पारिवारिक और सामाजिक बदनामी या कोर्ट-थाने के चक्कर में पड़ना नहीं चाहती थी, अब वो दोषियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराकर अपनी सुरक्षा के लिए संरक्षण की मांग कर सकतीं है। इस नए कानून के तहत अब मजिस्ट्रेट को 60 दिन के भीतर फैसला सुनाना होगा। इस कानून के लागू होने से पीड़ित महिला अदालत में किसी भी जज के समक्ष स्वयं या किसी वकील या सेवा प्रदान करने वाली संस्था या संरक्षण-अधिकारी की सहायता से दोषियों के खिलाफ शिकायत दर्ज करा सकती है और स्वयं की सुरक्षा के लिए प्रभावशाली संरक्षण की याचना कर सकती है।

इस कानून का उल्लंघन करने पर सजा का भी प्रावधान है। इस कानून के तहत महिला किसी भी तरह का आवेदन कर सकती है, खुद के लिए नि:शुल्क कानूनी सलाह की सहायता ले सकती है, अगर महिला चाहे तो इस केस की सुनवाई बंद कमरे में भी हो सकती है। भारतीय दंड संहिता के अनुसार पीड़िता दोषियों के खिलाफ क्रिमनल याचिका दायर कर सकती है। घरेलू हिंसा अधिनियम के अंतर्गत महिला घरेलू हिंसा को रोकने के लिए कानूनी रूप से केन्द्र सरकार और राज्य सरकार समान रूप से जिम्मेदार और जवाबदेह हैं।

महिला-घरेलू-हिंसा से निपटने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग ने भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसके अंतर्गत महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाना, आशा, एएनएम आदि की सहायता से ग्रामीण महिलाओं के लिए जागरूकता अभियान आदि प्रमुख हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग तथा स्वस्थ्य विभाग का यह एक सम्मिलित प्रयास है। इसी तरह महिलाओं को पहले राज्यस्तर पर फिर जिला, ब्लॉक स्तर पर प्रशिक्षित करना भी शामिल है।

घरेलू हिंसा को रोकने का एक प्रभावशाली उपाय यह भी है कि माता-पिता को अपनी सोच में परिवर्तन करना होगा। उन्हें लड़का-लड़की में भेद भाव नहीं करना होगा। अपने बेटों, अपने भाइयों को महिलाओं की इज्जत करनी सिखानी होगी,चाहे बात घर की महिलाओं की हो या बाहर की। इसके साथ ही ससुराल द्वारा प्रताड़ित शादी-शुदा बेटी या विधवा बेटी जो पति और ससुराल वालों से प्रताड़ित होकर भी उनके साथ घर में रखने को मजबूर है, ऐसी स्थिति में माता-पिता को चाहिए कि जब तक उसके रहने का प्रबंध कहीं ना हो वे उसे अपने पास रहने का अधिकार दें तभी वो पति और ससुराल वालों से सुरक्षित रहेगी। सरकार द्वारा चलाए जा रहे बेटी-पढ़ाओ, बेटी- बचाओ आंदोलन भी इस समस्या से निबटने का एक सफल प्रयास है, महाराष्ट्र–सरकार द्वारा घरेलू हिंसा के खिलाफ चलाये जा रहे 'बेल बजाओ' अभियान जैसे उपाय भी कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

मेरा ऐसा मानना है कि कानून चाहे कितने ही बन जाए पर जब तक एक महिला अपने पारिवारिक दायरे से बाहर आकर खुद दोषियों के खिलाफ आवाज नहीं उठायेगी तबतक महिला घरेलू हिंसा या किसी भी अन्य शोषण से मुक्त नहीं हो पायेगी। इसके लिए उसे दबी-कुचली परंपराओं को तोड़ कर आशावादी सोच साथ दृढ़ संकल्पित होकर आगे बढ़ना होगा तभी वो इससे चंगुल से बाहर निकल पायेंगी और दोषियों को उनके किए की सज़ा भी दिलवा पाएंगी।

पत्नी- श्री सुनील कुमार
विक्रय एवं विपणन विभाग
बीसीसीएल

मेरी रूस यात्रा

- रुद्र प्रताप सिंह

यात्राएं केवल तफ़रीह के लिए ही नहीं होती। भारत से बाहर बेटी की मेडिकल की पढ़ाई पूरी होने पर उसके दीक्षांत समारोह के समय विदेश यात्रा का अवसर मिला। 10 जून, 2019 के मध्यरात्रि, रूसी विमान एयरोफ़्लोट ने जब उड़ान भरी तो हमारे सपनों को भी मानो पंख से लग गये। जीवन संगिनी का साथ होना यात्रा के आनंद को दोगुना कर रहा था। यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी इसलिए कुछ घबराहट भी थी और उत्तेजना भी। यान को सीधे मास्को पहुँचना था। मैं सो गया था, नींद खुली तो यान मास्को पहुँचने वाला ही था। पाकिस्तान द्वारा एयरस्पेस न देने के कारण हमारा विमान दो घंटे विलंब से जब मास्को हवाई अड्डे को स्पर्श कर रहा था तब सुबह के नौ बज रहे थे। रूसी समय के अनुसार साढ़े ग्यारह का समय था।इमिग्रेशन आदि संबंधी तमाम जाँच के पश्चात जैसे ही हम हवाई अड्डे से बाहर निकले, मनुज से मुलाकात हो गयी। मनुज बेटी का साथी है। अनजान शहर और मनुज की उपस्थिति एक सुखद अहसास से कम नहीं थी। वहाँ से हम बीटा होटल पहुँचे । मास्को में दिल्ली के बनिस्पत होटल काफी किफायती प्रतीत होते हैं।

कुछ आराम करने के बाद तैयार होकर हम मास्को शहर घूमने निकले। शहर में मेट्रो का जाल बिछा हुआ है।यहां एक सुविधा है 400 रूबल (रूसी मुद्रा) का टिकट बनवा लें और तीन दिनों तक मेट्रो से घूमते रहें। सीढ़ियों की जगह लंबे-लंबे एस्केलेटर बने हुए हैं। रूस विशालतम देश है और मास्को शहर रूस की विशालतम राजधानी। आधुनिक व खूबसूरत शहर। शहर दिन में तो भव्य लगता ही है, रात में और भी शानदार दिखता है। मास्को में सूर्यास्त 10 बजे के बाद ही होता है। नगर की सफाई व्यवस्था, रख-रखाव विश्व-स्तरीय है और प्रभावित करता हैं। सड़कों से सटे फुटपाथ, वृक्षावली, पार्क एवं कृत्रिम जंगल इसे अलग ही नजारा प्रदान करते हैं। कहीं कोई गंदगी नहीं। जून यहाँ के लिए टूरिस्ट ट् सीजन है अतः इसी समय सैलानी भी अधिक संख्या में आते हैं।

मास्को रूस की व्यापारिक और वाणिज्यिक राजधानी भी हैं। शहर में कई अजूबे हैं। ऑस्टैनकीनो टावर उनमें से एक है। पाँच सौ चालीस मीटर ऊँचा यह टावर लंबे समय तक यूरोप की सबसे ऊंची संरचना बना रहा है। टावर की 337 मीटर की ऊंचाई पर एक दुनियाँ ही बसी जहाँ अत्यधिक तेज लिफ्ट से जाया जाता है।इस ऊँचाई पर कैफेटरिया, मल्टीमीडिया कॉम्पलेक्स एवं अजायबघर भी है। यहाँ से शहर का पैनोरेमिक नजारा अतुलनीय दिखाई देता है। शहर में अनेक विश्व धरोहर टावर्स, चर्च, कैथ्रेडल व स्क्वायर हैं। रेडस्क्वायर मास्को का हृदय स्थल है। यह वर्तमान में रूस के राष्ट्रपति का आधिकारिक निवास है। यह स्थान ऐतिहासिक किले, मॉल, होटल, झूलों आदि से सुसज्जित है। लाल चौक की भव्यता शब्दों में बयां करना सम्भव नहीं हैं। देखकर आँखे तृप्त हो जाती है।

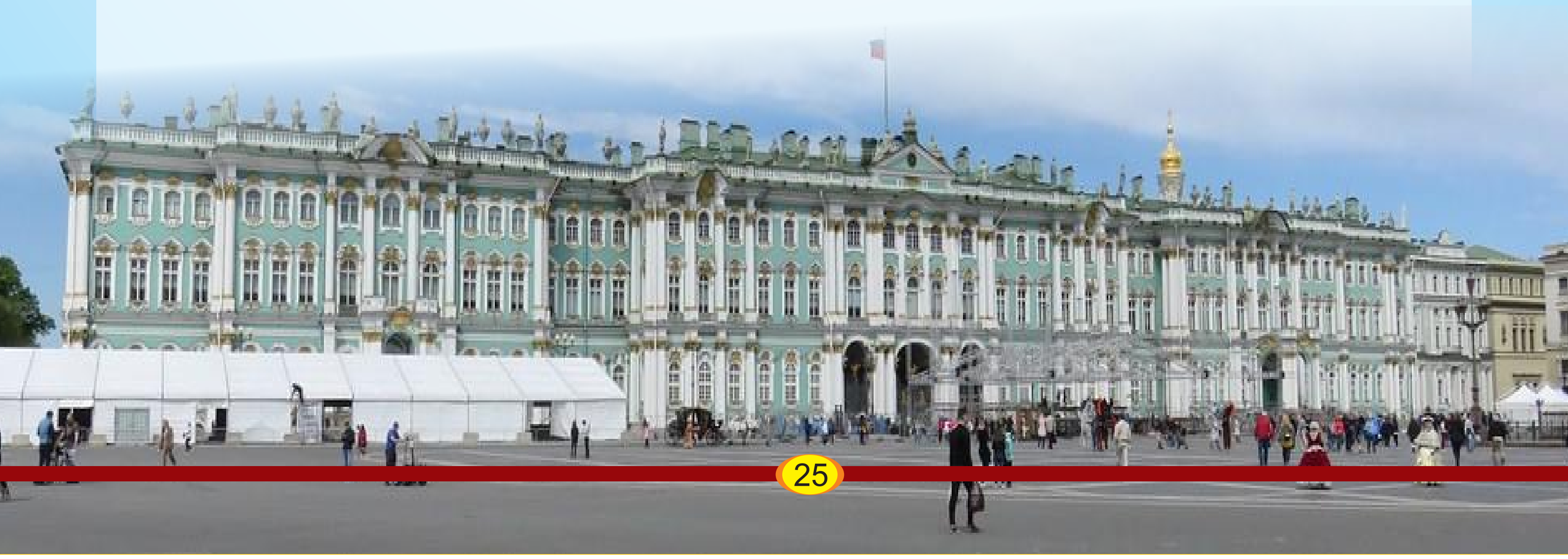

मास्को व लुलुम्बा विश्वविद्यालय दर्शनीय है।

कुछ दिनों तक मास्को भ्रमण के पश्चात रेलगाड़ी द्वारा स्मोलेस्क के लिए प्रस्थान किया। रूस में रेल यात्रा एक सुखद अनुभव है। प्रवेश से पहले ही यात्रियों के टिकट व पासपोर्ट की जाँच कर ली जाती है। चार घंटे की यात्रा के बाद हम स्मोलेस्क पहुँचे। रास्ते में प्रथम अन्तरिक्ष यात्री यूरी गागरिन का गाँव मिला। यूरी गागरिन के नाम पर स्टेशन भी है। सभी स्टेशन और प्लेटफार्म एकदम साफ सुथरे प्लेटफार्म पर कोई दुकान नहीं। पटरियों के किनारे वृक्षों की अंतहीन कतार...जंगल और हरियाली। हम स्मोलेस्क में होटल सन एण्ड सैण्ड में ठहरे थे।

स्मोलेस्क युद्ध करने वाले योद्धाओं व विजेताओं के शहर के नाम से प्रसिद्ध है। जार के शासन काल में पोलैण्ड को यहीं के सैनिकों ने पराजित किया था। यह एक छोटा परन्तु प्राकृतिक छटा से भरापूरा शहर है। 1920 में स्थापित स्मोलेस्क स्टेट मेडिकल युनिवर्सिटी शहर की शान है। बेटी का दीक्षांत शानदार ढंग से संपन्न हुआ। ये पल आजीवन स्मरणीय रहेंगे।

स्मोलैस्क की यादों को समेटकर हम सेंट पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो गये। 11 घंटे की सड़क यात्रा के बाद सेंट पीटर्सबर्ग पहुँचे। रूस में सड़कों के किनारे कुछ नहीं होता। तीस-चालीस किलोमीटर के बाद पेट्रोलपम्प और उससे लगा कैफेटेरिया। फिर केवल वृक्षों की अंतहीन कतार, जंगल और हरियाली। रूस में सभी जगह काम करने वाली ज्यादातर महिलाएं है।यहां महिलाएं अनुपात में पुरुषों से ज्यादा भी हैं।

सेंट पीटर्सबर्ग पीटर महान द्वारा बसाया गया था। अत: इसका नामकरण जार पीटर द ग्रेट के नाम पर किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध में जार शासकों ने इसका नाम पेत्राग्राद कर दिया जिसका अर्थ है पीटर नगर। लेनिन के निधन के बाद इसका नाम लेनिनग्राद हो गया। 1991 से यह पुनः सेंट पीटर्सबर्ग के नाम से जाना जाने लगा। यह न केवल जारशाही की राजधानी थी बल्कि आधुनिक रूस की सांस्कृतिक राजधानी भी है। नेवा नदी इस शहर की जीवन रेखा है। प्राकृतिक एवं मानव निर्मित अजूबों से भरपूर यह रूस का सबसे खूबसूरत शहर है। शहर का प्रमुख स्थान पैलेस स्क्वायर है। यहीं राजा का शीतकालीन महल है जो विंटरपैलेस के नाम से जाना जाता है। अब यह स्मारक व म्युजियम में तब्दील हो गया है। म्युजियम देखकर रूसियों की सांस्कृतिक अभिरुचि का अहसास हुआ। अपनी धरोहरों, सांस्कृतिक उपलब्धियों को सहेजना रूसियों से सीखना चाहिये।

विंटरपैलेस पर्यटकों को सम्मोहित करता है। पीटर्सबर्ग में सूरज 11 बजे अस्त होता है और तीन बजे उदय। कभी-कभी अस्त ही नहीं होता जिसे सफेद रात कहते हैं। पीटर्सबर्ग को लेनिनग्राद कहा जाता था। साम्यवाद के जनक लेनिन का घर यहीं है। महान लेखक टाल्सटाय, उपन्यासकार दोस्तो वस्की का इस शहर से गहरा नाता है। पीटर्सबर्ग पर्यटकों का स्वर्ग है। थ्रीहन्ड्रेड इयर्स पार्क भी कई अजूबों में एक है। यह बाल्टिक सागर का किनारा है। यहाँ एक सुन्दर टावर है जिसे मित्रता की चट्टान कहा जाता है जो पीटर्सबर्ग और हेलसिंकी की मित्रता का गवाह है। यहाँ का नजारा आंखों को सुकून देता है। सच कहूँ तो सेंट पीटर्सबर्ग विश्व भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। शहर में पर्वत श्रृंखलाएं, आकर्षक बीच, नेवानदी में रोमांचित कर देने वाली रात्रि कुजिंग, राजाओं के महल, विशालकाय बाग, अजायबघर, घने वन सब कुछ तो है। यहाँ की खूबसूरती सीने से लगानेवाली है। सागर किनारे अवस्थित राजा का महल अद्वितीय है। पीटर्सबर्ग देखकर मजा आ गया। यहाँ सेबुलेट ट्रेन से वापस मास्को आए और फिर स्वदेश वापसी की तैयारी...।

भ्रमण में एडवेंचर है और रोमांच भी। आराम की स्थिति से बाहर निकलना पड़ता है। जब थोड़े से दम-खम से जीवन भर रोमांचित करने वाले अनुभव मिलेतो घुमक्कड़ी कर ही लेनी चाहिए। विश्व स्तरीय दो महानगर मास्को एवं सेंट पीटर्सबर्ग घूमकर मैं तृप्त हो गया। एक राजनीतिक गरिमा व शक्ति का महानगर और दूसरा सांस्कृतिक चेतना, कलात्मकता का महानगर। अन्त में इतना ही कहूँगा।

माना कि खूबसूरत होंगे नजारे और भी मगर
है तुझे देखने के बाद कोई ख्वाहिश नहीं मुझे।

वरीय अपर निदेशक (मानव संसाधन) सह
उप महाप्रबंधक (प्रशासन)
डीवीसी मैथन परियोजना

स्त्री

- राजपाल यादव

बहुत मुश्किल काम है 'स्त्री' होना
दूसरों की भावनाओं को समझना और समझाना
स्त्री एक है पर रुप अनेक
कहीं माँ बन परिवार पालती है
कहीं पत्नी बन घर संभालती है
कहीं बहन बन भाई को दुलारती है
तो कहीं बेटी बन घर-आंगन संवारती है

स्त्री की मेहनत भी अजीब है
और फितरत भी
कब वह चिड़िया बन
आसमान में उड़ने लगेगी
कब आकाश की ऊंचाइयों में विचरण करेगी
और कब धरती पर
परिश्रम से थक स्वेद बूंदों से झिलमिलाएगी
पता नहीं चलता

लोग कहते हैं-
स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा
दया, ममता ज्यादा होती है
मैं कहता हूँ-
किसने कहा कि पुरुषों में
दया, ममता, करुणा नहीं होती
मेरी नजर में-
दया, ममता, करुणा
मात्र स्त्रियों की नहीं बपौती

कुछ पुरुष स्त्रियों से भी अधिक
कोमल, करुण, संवेदनशील होते हैं
उनकी छाती में फूट-फूट कर
रोया भी जा सकता है
और निश्चिंत होकर पहलू में सोया भी जा सकता है

दरअसल,
स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं
स्त्री अर्धांगिनी है तो पुरुष उसकी जरूरत है

फिर भी स्त्री होना
कई मायनों में संपूर्णता की निशानी है
स्त्री के बिना पूरी कायनात ही बेमानी है

पूर्व महाप्रबंधक (कार्मिक)
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद
वर्तमान पता : डी-2/6, आर.डी. सिटी,
सेक्टर -52, गुरुग्राम-122001

बसंत गीत

- रिंकू दुबे

सुनो ! बसंत फिर आया है,
कहना मुझको रे ! ग्राम्य सखे
क्या महुआ फिर अँकुराया है ?

क्या आम्र वनों में सच कहना
लघु बौर मृदुल फिर आए हैं ?
आई है चंपा की कलिका
तरु में क्या यौवन छाए हैं?
क्या कोकिल की कूकों से
फिर प्रेमिल मन बौराया है?
क्या महुआ फिर अँकुराया है

पथ चौबारों से क्या छन कर
फिर पावन मंद अमंद मिले ?
प्रेमी अधरों पर क्या हर क्षण
मृदु विरह-मिलन के छंद मिले ?
चिर अकथ उदासी विरहन से
क्या विरहा मिलने आया है ?
क्या महुआ फिर अँकुराया है

पनघट पर जल लेने आती
क्या रमणी पुनः लजाती है ?
दाँतो से दाबे पल्लू को
क्या प्रणय कथा कह जाती है ?
क्या राधा फिर कह मग्न हुई -
मन का मधुबन हर्षाया है ?
क्या महुआ फिर अँकुराया है?

राजभाषा विभाग
बीसीसीएल

नन्हीं कोंपल

- श्वेता गुप्ता

एक दिन मैंने बीज लगाया
मौसम ने फिर पलटा खाया ।
आई झूम के बरखा रानी
हुआ धरा पर पानी-पानी ।।

जगीं नींद से आँख उनींदी
और बीज ने भी ली अंगड़ाई ।
धीरे-धीरे आश जगी फिर, उसी
बीज से नन्हीं कोंपल बाहर आई ।।

उसे नींद से जगाती वर्षा रानी
कोंपल लगती प्यारी-प्यारी ।
रिमझिम-रिमझिम थपकी देती
बोले वर्षा उठ जाग दुलारी ।।

अभी कोमल है, मन और शाख तेरे
कई प्रयत्न करने हैं तुझे सांझ सवेरे ।
तब ये दो पत्तियों की शाखाएँ बनेगी
अभी जो कोमल हैं हाथ वो सुदृढ़ होंगे ।।

वृक्ष बनी नन्ही कोंपल प्यारी
वर्षों की मेहनत रंग लाई ।
गहराया धरती का चीवर
हरियाली चहुँ ओर है छाई ।।

पूर्व डाइटिशियन
जियलगोरा क्षेत्रीय चिकित्सालय
लोदना क्षेत्र
बीसीसीएल

केवल एक पुल

- सीताराम गुप्ता,

मैं
बनाना चाहता हूँ
एक पुल
तेरे मेरे उसके सबके
दरमियाँ
एक पुल
विश्वास जिसकी नींव हो
और जितने ईंट पत्थर
हों सभी सद्भावना के
स्नेह के सब
और इनको जोड़ने में
आत्मीयता का ही केवल
हाथ हो
तेरा मेरा उसका सबका
साथ हो
एक ऐसा पुल
केवल एक
अपनी ज़िंदगी में
चाहता हूँ
मैं बनाना
आज ही
मुल्तवी
उसको नहीं
कर पाऊँगा मैं
ज़िंदगी का क्या भरोसा
इसलिए मैं
आज ही
रखता हूँ उसकी नींव
आप सबके सामने ही
और अगर
पूरा नहीं मैं कर सकूँ
तो तुम इसको
करना मुकम्मल
बेशक इस पर
नाम अपना
मोटे-मोटे अक्षरों में
लिख लेना
लेकिन
पुल पूरा करना
पुल ज़रूरी है
पुल होगा तो
हम सब पार
उतर जाएँगे
इक दूजे से
जुड़ जाएँगे

ए डी-106-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली-110034

कोरोना

- विजय कुमार

अदृश्य कोरोना से लड़ने को
अडिग खड़ा है हिन्दुस्तान ।
ईश्वर रूपी अवतार में आए
देखो हमारे स्वास्थ्य कर्मी महान।।

बिगड़ो को पाठ पढ़ाते
असहायों को भोजन कराते ।
घर परिवार त्याग सड़को पर उतरे
देखो हमारे प्रशासन कर्मी महान।।

देश सेवा हैं जिनका धरम
साफ-सफाई है इनका करम ।
जान हथेली पर लेकर निकले
देखो हमारे स्वच्छ भारत की सेना महान।।

कहाँ थे हम पीछे रहनेवाले
विपरीत परिस्थितियों से लड़नेवाले ।
निर्बाध ऊर्जा आपूर्ति की ठानी
देखो हमारे कोयला श्रमिक महान।।

जरुरत हैं आज राष्ट्रभक्ति निभाने की ।
शारीरिक दूरी अपनाने की ।।
तभी हम कोरोना पर जीत पायेंगे ।
वर्ना जीवन भर पछताते रह जायेंगे।।

लिपिक, दोबारी कोलियरी
बस्ताकोला क्षेत्र

सुरक्षा प्रशिक्षण उत्पादन की आत्मा

- धीरज कुमार रजक

किसी भी सुरक्षित कार्य स्थल या वातावरण की नींव एक प्रभावी सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम है। कई बार प्रबंधन उन लाभों को पहचानने में विफल होते हैं जो सुरक्षा प्रशिक्षण किसी भी कंपनी की निचली रेखा पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते है। सुरक्षा प्रशिक्षण दुर्घटनाओं को रोक कर उत्पादन को सुचारू रूप से चलाने में मदद करते हैं। चोट और दुर्घटनाएं उत्पादन के संचालन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं साथ ही कंपनी की निचली रेखा पर नकारात्मक रूप से प्रभाव डालती है। सुरक्षा प्रशिक्षण के प्रमुख लक्ष्य कल्याण को बढ़ावा देना और चोट तथा दुर्घटनाओं को रोकना भी है।

प्रभावी प्रशिक्षण आपके कार्यस्थल पर सुरक्षा की संस्कृति बनाने में मदद करता है। व्यापक सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम अल्पकालिक प्रयास नहीं है बल्कि यह एक लगातार चलने वाले कार्यक्रम का भाग है। सुरक्षा प्रशिक्षण कर्मचारियों और प्रबंधन के बीच उत्पादक (स्वस्थ) संचार को बढ़ावा देता है।एक सफल कंपनी के लिए फ्रंट लाइन स्टाफ और प्रबंधन के बीच स्पष्ट संचार आवश्यकता होता है। प्रशिक्षण संचार को प्रोत्साहित करता है और बेहतर सुरक्षा के अवसरों पर चर्चा करने के लिए उत्पादन कर्मचारियों को सशक्त बनाता है।

पुराने श्रमिकों के लिए अनुपस्थिति को कम करने के लिए प्रशिक्षण विशेष रूप से फायदेमंद है। सुरक्षा प्रशिक्षण 45 से 55 वर्ष की आयु के बीच के श्रमिकों के लिए सबसे अधिक सहायक है जो चोट के बाद काम से सबसे अधिक दूर रहते है। जब कंपनी सुरक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देती है तो कर्मचारी अपने साथ सुरक्षा चुनौतियों और संभावित खतरों के बारे में संवाद करने में सहज हो जाते है। यह जानकारी दुर्घटनाओं को रोकने और चोट से संबंधित अनुपस्थिति (इन्जरी ऑन ड्यूटी) से संबंधित लागत को कम करने में अमूल्य सिद्ध होती है।

कम दुर्घटनाओं से सकारात्मक रूप से उद्योग की प्रतिष्ठा और उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। जिसके कारण आप अपने ग्राहकों को अधिक प्रभावी रूप से आकर्षित कर पाने में सक्षम होते हैं। प्रतिभा में निरंतर वृद्धि आपकी कंपनी की स्थिति को और मजबूती प्रदान करती है।

सुरक्षा प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए हम आधुनिक वेब-आधारित सुरक्षा प्रशिक्षण को उपयोग में ला सकते है। इसके द्वारा हम विश्व स्तर के सुरक्षा विशेषज्ञों की सेवाएं और समाधान बहुत ही कम लागत में ई-लर्निंग पटल पर ऑनलाइन सुरक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा यात्रा और वाहन से जुड़ी लागत को कम किया जा सकता है । इसके अलावा वेब-आधारित सुरक्षा प्रशिक्षण कागज और मुद्रण लागत को भी कम करता है। वेब आधारित सुरक्षा प्रशिक्षण के द्वारा उस कर्मचारी को इंगित किया जा सकता है जिसे सुरक्षा की अतिरिक्त मदद की आवश्यकता हो सकती है।

इस प्रकार हमारे सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विशेष प्राथमिकता दे कर हम हमारी कंपनी के शून्य दुर्घटना के लक्ष्य को प्राप्तकर सकते हैं और इससे भी आगे आधुनिकरण करके उचित गुणवता के सुरक्षा प्रशिक्षण कम लागत में दिए जा सकते हैं।

प्रबंधक (खनन)
जीवीटीसी, चांदमारी, बस्ताकोला क्षेत्र
बीसीसीएल

नाज़ है इन पर

बीसीसीएल कर्मी के पुत्र रोहित का सिविल सेवा परीक्षा में चयन

बीसीसीएल के केंद्रीय चिकित्सालय, धनबाद में फोरमैन इंचार्ज के पद पर कार्यरत श्री सुरेश प्रसाद के सुपुत्र रोहित कुमार ने संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा-2020 में 535वीं रैंक हासिल की है। रोहित वर्तमान में भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई में प्रबंधक हैं। उन्हें यह सफलता तीसरे प्रयास में मिली है। 2017 में भी रोहित साक्षात्कार तक पहुंचे थे लेकिन अंतिम रूप से उनका चयन नहीं हो सका था।

डीएवी कोयला नगर से 10वीं और 12वीं की पढ़ाई करने वाले रोहित कुमार अब तक देश की कई बड़ी परीक्षाओं में सफल हो चुके हैं। वर्ष 2007 में आईआईटी और एआईईईई की परीक्षा उत्तीर्ण की और एनआईटी वारंगल से बी.टेक करने के बाद इंडियन ऑयल में योगदान दिया। 2012 में कैट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आईआईएम कोझिकोड से एमबीए किया। रोहित कुमार की शानदार सफलता से संपूर्ण बीसीसीएल परिवार गौरवान्वित है और उनके सुखद और सफल भविष्य की शुभकामनाएं देता है।

डिप्लोमा इन मेडिकल लैबोरेटी एंड टेक्नोलॉजी में प्रथम स्थान

केंद्रीय चिकित्सालय धनबाद स्कूल ऑफ नर्सिंग की छात्रा सुश्री अलीशा परवीन ने डिप्लोमा इन मेडिकल लैबोरेटी एंड टेक्नोलॉजी (डीएमएलटी) पाठ्यक्रम में धनबाद में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसी संस्थान के श्री अरविंद कुमार मंडल ने द्वितीय एवं सुश्री गंगा कुमारी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। केंद्रीय चिकित्सालय के चिकित्सा सेवाएं प्रमुख डॉ. ए के गुप्ता तथा डीएमएलटी पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. ए के साहा द्वारा श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने पर सभी छात्रों को बधाई दी गयी। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड परिवार इन छात्रों के उज्वल भविष्य की कामना करता है।

बोर्ड परीक्षा में जिले में 5वां स्थान

डीएवी पब्लिक स्कूल कोयला नगर के छात्र राहुल गुप्ता ने 10वीं बोर्ड परीक्षा में ९८.५ प्रतिशत अंक लाकर जिले भर में शीर्ष पांच में अपना स्थान बनाया है। राहुल के पिता कीनू महतो बीसीसीएल में इलेक्ट्रिशियन के पद पर कार्यरत हैं और माँ सुनीता देवी गृहिणी है। राहुल गुप्ता का कहना है कि सफलता के लिए नियमित पढ़ाई जरूरी है। यह नहीं होना चाहिए कि साल भर नहीं पढ़ें और परीक्षा के समय आप घंटों पढ़ाई करें। पढ़ाई के दौरान राहुल ने टीवी और मोबाइल से भी दूरी बनाए रखी। वह आगे चलकर आईआईटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना चाहते हैं। बीसीसीएल परिवार की ओर से राहुल को हार्दिक बधाई और उनके उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

कोविड-19 के खिलाफ़ बीसीसीएल के प्रभावी कदम

हमारे देश भारत के साथ-साथ पूरा विश्व वर्तमान में कोविड-19 महामारी से जूझ रहा है। ऐसी विकट परिस्थितियों में तमाम सुरक्षा एवं स्वास्थ्य उपाय जितने आवश्यक हैं, उतनी ही आवश्यकता सामाजिक समरसता को बनाए रखने और एक-दूसरे की ओर मदद का हाथ बढ़ाने की भी है। भारत कोकिंग कोल लिमिटेड अपनी कॉरपोरेट और सामाजिक जिम्मेदारी को बखूबी समझता है और देश की ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति के साथ ही साथ सामाजिक सरोकार के कार्यों में भी हमेशा सक्रिय रहता है।

कोरोना महामारी के इस दौर में कंपनी प्रबंधन द्वारा प्रशासन, सीएसआर और कल्याण आदि विभागों के माध्यम से पूरी तत्परता के साथ सुरक्षा एवं स्वास्थ्य उपाय तो किए ही गए, साथ ही साथ जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए भी निरंतर अभियान चलाया गया। इस दौरान किए गए कुछ उल्लेखनीय कार्य निम्नलिखित है:-

स्वास्थ्य सुविधाएं और सुरक्षा उपाय:

- कंपनी मुख्यालय कोयला भवन एवं अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों के प्रवेशद्वार पर ही तापमापी मशीन द्वारा कर्मचारियों एवं अधिकारियों सहित अन्य आगंतुकों के भी शरीर के तापमान की जाँच के उपरान्त ही प्रवेश की अनुमति।
- कंपनी कार्मिकों के साथ ही साथ आसपास के लोगों के बीच मास्क और सैनिटाइजर का व्यापक स्तर पर वितरण।

- कंपनी के केंद्रीय अस्पताल, धनबाद को 100 शय्या वाले समर्पित कोविड अस्पताल में परिवर्तन तथा कोविड देखभाल के लिए 24 घंटे कंपनी के डॉक्टर एवं अन्य चिकित्सा कर्मियों की तैनाती।
- कोरोना जैसी महामारी से लड़ने के लिए केंद्र, राज्य एवं जिला प्रशासन तथा श्रमिक संघों के साथ बेहतर तालमेल।

आसपास के क्षेत्रों में खाद्य सामग्री एवं आवश्यक वस्तुओं का वितरण:

कोरोना के खिलाफ़ अपनी लड़ाई में बीसीसीएल शुरुआत से ही आसपास के जरूरतमंद लोगों का ध्यान रख रहा है और सामुदायिक रसोई, राशन एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का वितरण करके समुदाय की मुश्किलों को कम करने का प्रयास कर रहा है। इस दिशा में कुछ उल्लेखनीय कदम-

- चन्दनकियारी पंचायत एवं झरिया विधान सभा के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले गरीब एवं जरूरतमंद लोगों के जरूरतमंद लोगों के बीच हजारों खाद्य पैकेटों का वितरण।
- बलियापुर ब्लॉक, अलकडीहा पंचायत में जरूरतमंदों के बीच राशन एवं खाद्य सामग्री का वितरण।

- कंपनी के सिविल इंजीनियरी विभाग द्वारा ठेका सफाई कर्मियों के बीच खाद्य सामग्री एवं मास्क आदि का वितरण।
- कंपनी मुख्यालय के सिविल इंजीनियरी विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा आर्थिक अंशदान करके कोराडीह बस्ती, गोविंदपुर में जरूरतमंदो के बीच सैकड़ों खाद्य पैकेटों का वितरित।

रेलगाड़ियों में खाने के पैकेटों का वितरण:

महामारी के इस अप्रत्याशित दौर में परिस्थितियां कुछ इस प्रकार बदलीं कि लोग देश-परदेश, अलग-अलग राज्यों शहरों से भूखे-प्यासे ही अपने घरों की और चल पड़े। सरकार द्वार चलायी गयीं श्रमिक स्पेशल रेलगाड़ियों में भर-भरकर लोग बिना कुछ खाए पिये अपने घरों की ओर निकल पड़े। इसी क्रम में धनबाद रेलवे स्टेशन पर भी कई श्रमिक स्पेशल रेलगाड़ियों का ठहराव हुआ तो भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अधिकारी एवं कर्मचारी भूखे-प्यासे लोगों को कुछ राहत देने के उद्देश्य से पहुंच गए धनबाद रेलवे स्टेशन। इस दौरान में कंपनी के सीएसआर विभाग द्वारा निम्नलिखित रेलगाड़ियों में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया –

- गुरुग्राम से चलकर बर्धमान पश्चिम बंगाल जाने वाली श्रमिक स्पेशल ट्रेन
- एरूनाकुलम से जसीडीह जाने वाली श्रमिक स्पेशल ट्रेन
- जयपुर से हावड़ा (पश्चिम बंगाल) जाने वाली श्रमिक स्पेशल ट्रेन

उपर्युक्त रेलगाड़ियों में सफर करने वाले प्रवासी मजदूरों के बीच लगभग 6 हजार खाद्य पैकेटों और फलों के जूस का वितरण किया गया। यह मदद अभियान मंडल रेल प्रबंधक के सहयोग से किया गया।

कोरोनाकाल में महाप्रबंधक (सीएसआर) श्रीमती आहुति स्वाई के नेतृत्व में संचालित उपर्युक्त मदद अभियानों में कंपनी के चिकित्सा, प्रशासन, सीएसआर, कल्याण एवं सिविल आदि विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस दौरान महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री संतोष नारायण सिन्हा का भी निरंतर सहयोग रहा।

कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल का बीसीसीएल दौरा

कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल मार्च, 2020 में बीसीसीएल के समीक्षात्मक दौरे पर धनबाद पहुँचे। इस दौरान श्री अग्रवाल ने बीसीसीएल के लोदना एवं पश्चिमी झरिया क्षेत्र की विभिन्न खदानों को दौरा किया और लोदना क्षेत्र द्वारा विकसित गोकुल इको-रेस्टोरेशन पार्क को देखा और वहाँ पौधारोपण भी किया तथा पश्चिमी झरिया क्षेत्र क्षेत्र में एक टेली-मॉनिटरिंग सिस्टम का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होने वाशरी को भी देखा और अधिकारियों के साथ आवश्यक विचार विमर्श किया। तत्पश्चात श्री अग्रवाल ने कंपनी के निदेशक मंडल और सभी क्षेत्रों के महाप्रबंधक तथा मुख्यालय के विभागाध्यक्षों के साथ एक समीक्षा बैठक की और उन्होंने कोयला उत्पादन व प्रेषण आदि से संबंधित विभिन्न महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में उत्पादन से संबंधित पुरस्कारों का वितरण भी किया गया जिसमें पश्चिमी झरिया क्षेत्र एवं कतरास क्षेत्र को लक्ष्य से अधिक उत्पादन करने के लिए, बरोरा क्षेत्र, गोविन्दपुर क्षेत्र, बस्तकोला क्षेत्र एवं लोदना क्षेत्र को उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि के लिए तथा कुसुण्डा क्षेत्र को एक दिन में सर्वाधिक उत्पादन करने के लिए सम्मानित किया गया।श्री अग्रवाल ने कंपनी मुख्यालय एवं सभी क्षेत्रों को जोड़ने व संचार को सुलभ बनाने वाले वीडियो कॉन्फ्रेसिंग सिस्टम का उद्घाटन भी किया।

कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष की इस दौरा अवधि में ही श्री अग्रवाल एवं धनबाद के उपायुक्त श्री अमित कुमार की उपस्थिति में भारत कोकिंग कोल लिमिटेड और जिला प्रशासन धनबाद एवं गिरीडीह के मध्य बीसीसीएल द्वारा सीएसआर के अन्तर्गत धनबाद जिले एवं आसपास के विभिन्न प्रखण्डों के 500 आँगनबाड़ी केंद्रों और 129 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास विकसित करने संबंधी दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। बीसीसीएल की ओर से महाप्रबंधक (सीएसआर) श्रीमती आहूति स्वाई एवं धनबाद प्रशासन की ओर से श्री महेश भगत, डीपीओ और इसी प्रकार गिरीडीह जिला के डीपीओ श्री अरूण कुमार सिंह ने एमओयू पर हस्ताक्षर किये।

निदेशक (कार्मिक) को सम्मान

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद के निदेशक कार्मिक श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव को कोल इण्डिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल द्वारा "प्रशंसा का प्रमाण पत्र" प्रदान करके सम्मानित किया गया। कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त इस प्रशंसा-पत्र को बीसीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद ने श्री राव को सौंपा और उन्हें बधाई देते हुए कहा कि कोल इण्डिया लिमिटेड में मानव संसाधन के क्षेत्र में श्री राव का अतुलनीय योगदान है।

अम्बेडकर जयंती का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 14.04.2020 को भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 129वीं जयंती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम में नियमानुसार शारीरिक दूरी को ध्यान में रखते हुए एक सादे समारोह में तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद के साथ कंपनी के निदेशक मंडल तथा उच्च अधिकारियों द्वारा कोयला नगर स्थित डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया गया। इस अवसर पर तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री रामशंकर महापात्र, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, महाप्रबंधक (कार्मिक/प्रशासन) श्री एस.एन. सिन्हा, महाप्रबंधक (कार्मिक/अधि. स्था.) श्री अमृत टोपनो, कोयला नगर अस्पताल प्रभारी डॉ. प्रेमी टोप्पो, कोल इण्डिया एससी/एसटी कर्मचारी संघ बीसीसीएल शाखा के महासचिव श्री राज कुमार कनौजिया एवं काफी संख्या में अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

श्रमिक दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि

दिनांक 01.05.2019 को श्रमिक दिवस के अवसर पर कोयला नगर स्थित शहीद स्मारक पर सर्वधर्म सभा का आयोजन किया गया। तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी. एम. प्रसाद एवं निदेशक (कार्मिक) श्री आर. एस. महापात्र, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता, मुख्य सतर्कता पदाधिकारी श्री कुमार अनिमेष, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के उप महानिरीक्षक श्री पी रमन एवं अन्य महाप्रबंधकों, विभागाध्यक्षों व अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा कोयला उद्योग के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इससे पूर्व प्रातःकाल में तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र, महाप्रबंधक (सीएसआर) श्रीमती आहूति स्वाईं, महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री एस. एन. सिन्हा आदि द्वारा श्रमिक चौक रांगाटांड़ में स्थित श्रमिक प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया गया। इस अवसर पर कंपनी के दो वरिष्ठ कर्मचारी श्री रामेश्वर प्रसाद यादव, वरिष्ठ ओवरमैन, बस्ताकोला क्षेत्र एवं श्री सरजू प्रसाद मिस्त्री, मुख्य चैनमैन, पूर्वी झरिया को सम्मानित भी किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

15 अगस्त 2020 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 74वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस दौरान कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पीएम प्रसाद द्वारा कंपनी के सभी निदेशकों और मुख्य सतर्कता पदाधिकारी की उपस्थिति में कोयला भवन मुख्यालय में तिरंगा फहराया और तत्पश्चात हर वर्ष की भांति सिजुआ स्टेडियम में भी अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस बार कोविड-19 वैश्विक महामारी की स्थिति के देखते हुए स्वतंत्रता दिवस का आयोजन समारोह सीमित रूप से किया गया। आयोजन के दौरान कोविड-19 प्रोटोकॉल के संबंध में सरकार द्वारा जारी सभी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में दिनांक 21 फरवरी, 2020 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बीसीसीएल सामुदायिक भवन, कोयला नगर में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद द्वारा किया गया। इस अवसर पर बीसीसीएल की गृह पत्रिका 'कोयला भारती अंक-32' का विमोचन किया गया। इसके अलावा कार्यक्रम में तत्कालीन महाप्रबंधक (कार्मिक एवं राजभाषा) श्री राजपाल यादव के पांचवें काव्य संग्रह 'अभी थका नहीं हूँ मैं' और बीसीसीएल के सेवानिवृत्त अधिकारी एवं जानेमाने लघु कथाकार श्री कृष्ण मनु के लघु कथा संग्रह 'मुट्ठी में आक्रोश' का भी विमोचन किया गया। अपराह्न में एक विभागीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बीसीसीएल में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा काव्यपाठ किया गया।

बीसीसीएल समर्पण महिला समिति द्वारा जरूरतमंदों की मदद

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में असहाय और जरूरतमंदों की मदद के लिए बीसीसीएल की समर्पण महिला समिति भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (मुख्यालय) की सदस्य सामने आईं और कई दिनों तक नियमित अंतराल पर जगह-जगह जाकर लोगों के लिए मानवीय मदद का हाथ बढ़ाया। इसी क्रम में समिति द्वारा सांई मंदिर, कोयला नगर में एक संक्षिप्त कार्यक्रम करके सफाई कर्मचारियों को कोरोना संक्रमण की रोकथाम और इससे बचने के उपाय बताये गये तथा लगभग 80 सफाई कर्मचारियों के बीच सुरक्षा किट, जिसमें मास्क, सैनिटाईजर, नहाने व कपड़ा धोने के साबुन के साथ ही खाद्य सामग्री, का वितरण किया गया। समिति द्वारा केंदुआडीह बस्ती में गरीब एवं जरूरतमंद परिवारों के बच्चों के लिए भोजन तथा मास्क आदि की भी व्यवस्था की गयी। इसके अलावा समिति द्वारा अपने इस मदद अभियान में वार्ड नंबर 35, धनसार में लॉकडाउन से प्रभावित 100 से अधिक दैनिक मजदूरों के बीच खाद्य सामग्री एवं अन्य आवश्यक सामान का भी वितरण किया गया और वहां संसार परिवार द्वारा चलायी जा रही सामुदायिक रसोई में योगदान दिया तथा भविष्य में भी अपना योगदान देने का आश्वासन दिया।

इस पूरे मानवीय अभियान में समिति की अध्यक्षा श्रीमती पी विमला प्रसाद एवं उपाध्यक्षा श्रीमती रश्मि रेखा महापात्रा, श्रीमती नीतू प्रसाद , श्रीमती सागरिका श्रीवास्तव, श्रीमती मिली दत्ता, श्रीमती संगीता गोस्वामी तथा अन्य सदस्यों में श्रीमती चेतना कुमार, श्रीमती अदिति त्यागी, श्रीमती सीमा सिन्हा एवं श्रीमती सरिता आदि का सामूहिक योगदान रहा।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कोरोना वायरस: जागरूकता एवं बचाव कार्यशाला

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिनांक 08 मार्च 2020 को कंपनी मुख्यालय कोयला भवन में फोरम ऑफ वुमेन इन पब्लिक सेक्टर (विप्स) द्वारा कोरोना वायरस: जागरूकता एवं बचाव विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यक्रम का उद्घाटन चिकित्सा सेवाएं प्रमुख, डॉ. मुक्ता साहा और महाप्रबंधक (का0/ कल्याण) श्रीमती आहूति स्वाईं ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक) श्रीमती कुमारी कुमकुम एवं वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. निकिता अनूप मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम में बढ़ते कोरोना वायरस के प्रकोप से बचने और आवश्यक सावधानी रखने के प्रति कंपनी की महिला अधिकारी एवं कर्मचारियों को जागरुक किया गया। इसके महिलाओं की सुरक्षा और महिला अधिकारों से संबंधित अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गयी। विप्स बीसीसीएल शाखा की संयोजिका एवं वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक) श्रीमती केया मुखर्जी द्वारा सभी का स्वागत किया गया तत्पश्चात श्रीमती निवेदिता, उप प्रबंधक (कार्मिक) द्वारा औपचारिक स्वागत स्वागत वक्तव्य दिया गया। कार्यक्रम का संचालन उप प्रबंधक (कार्मिक) माधुरी सिंह ने किया तथा धन्यवाद श्रीमती सुजाता कुमारी प्रबंधक (कार्मिक) ने किया।

स्वास्थ्य जाँच शिविर

पूर्वी झरिया क्षेत्र

पूर्वी झरिया क्षेत्र, बीसीसीएल द्वारा 'द मिशन हॉस्पिटल दुर्गापुर' के सहयोग से 17 फरवरी 2020 को भौंरा क्षेत्रीय अस्पताल में दिल की बीमारी की जाँच से संबंधिक एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. पी. सिन्हा ने 100 से व्यक्तियों की स्वास्थ्य जाँच की और डॉ. बी. शेखर और डॉ. एस. मंडल ने भी भौंरा अस्पताल की टीम के साथ मिलकर स्वास्थ्य शिविर को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गोविंदपुर क्षेत्र

बीसीसीएल के गोविंदपुर क्षेत्र द्वारा दिनांक 15.2.2020 को धर्माबांध मिडिल स्कूल में सीएसआर के तहत स्कूली बच्चों के लिए एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम से 200 से अधिक बच्चे लाभान्वित हुए।

वेंडर विकास कार्यक्रम : कार्यशाला

बीसीसीएल के कोयला नगर के कम्युनिटी हॉल में 24.02.2020 को भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'नेशनल एससी-एसटी हब' के तहत बीसीसीएल एवं अन्य सरकारी उपक्रमों के साथ काम करने वाले एससी-एसटी उद्यमियों को विकसित और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'वेंडर विकास कार्यक्रम' एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन झारखंड औद्योगिक अवसंरचना विकास निगम (JIIDCO) और भारत कोकिंग कोल लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बीसीसीएल के निदेशक तकनीकी (योजना/ परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी ने की। कार्यक्रम में बीसीसीएल महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन) श्री एन एस सैनी, जिला उद्योग केन्द्र, धनबाद के महाप्रबंधक तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

विधि विभाग द्वारा वेबिनार का आयोजन

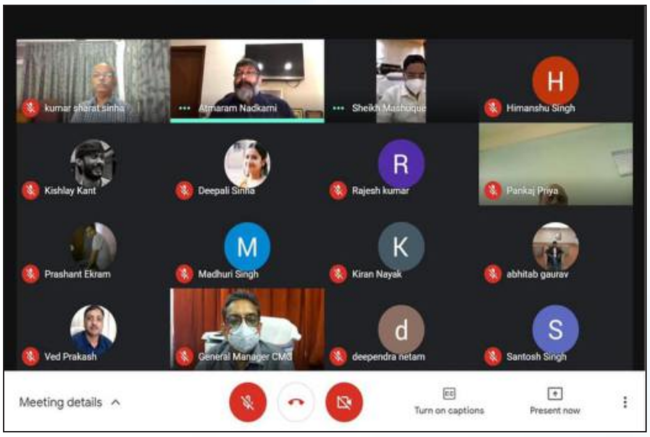

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के विधि विभाग द्वारा दिनांक 12.08.20 को 'सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के संदर्भ में नोटिंग/ड्राफ्टिंग एवं इसके वैधानिक निहितार्थ' विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला (वेबिनार) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पूर्व अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल, श्री आत्मानंद नाडकर्णी द्वारा मुख्य वक्तव्य दिया गया। इस वेबिनार में कंपनी के 75 अधिकारियों ने में भाग लिया। कार्यशाला में विचार-विमर्श के एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया जिसमें श्री नाडकर्णी ने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर दिये। इस वेबिनार का आयोजन कंपनी के निदेशक (कार्मिक) श्री पी.वी.के.आर. मल्लिकार्जुन राव की पहल पर उनके दिशा-निर्देशन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में निदेशक (कार्मिक) द्वारा अपने प्रशासनिक अनुभवों को भी साझा किया गया।

सुरक्षा चौपाल का आयोजन

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड ने खान सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पूर्वी झरिया क्षेत्र के लाल मैदान में 21.02.2020 को एक सुरक्षा चौपाल का आयोजन किया। इस सुरक्षा चौपाल में अपने परिवार के सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में कंपनी के कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

प्रमुख झलकियाँ

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, खान सुरक्षा महानिदेशालय तथा श्रमिक संगठन के प्रतिनिधियों के बीच दिनांक 29-02-2020 को त्रिपक्षीय सुरक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता बीसीसीएल सुरक्षा परिषद के सदस्य श्री आर पी सिंह के ने की और इस अवसर पर तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद, खान सुरक्षा महानिदेशालय के उप महानिदेशक श्री डी के साहू, बीसीसीएल के निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार के अलावा सुरक्षा परिषद, खान सुरक्षा महानिदेशालय एवं बीसीसीएल के अनेक उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

कोल इंडिया लिमिटेड तथा इसकी सभी अनुषंगी कंपनियों एवं देशभर के अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के बीच दिनांक 5 से 7 फरवरी 2020 तक आयोजित ऑल इंडिया पब्लिक सेक्टर एथलेटिक्स मीट प्रतियोगिता में बीसीसीएल ब्लाक-II क्षेत्र में मेकेनिक पद पर कार्यरत श्री प्रवीण चन्द्र मिश्रा ने हैमर थ्रो में तीसरा स्थान प्राप्त किया। तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर.एस. महापात्र ने श्री मिश्रा को उनकी इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए उन्हें सम्मानित किया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड लोदना क्षेत्र के जियलगोरा स्टेडियम में दिनांक 23 फरवरी 2020 खान सुरक्षा सप्ताह एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते हुए खान सुरक्षा महानिदेशालय के निदेशक श्री आर सुब्रामनियम और भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद द्वारा किया गया।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड में 29 फरवरी 2020 को सेवानिवृत हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सम्मान में आयोजित समारोह के अवसर पर उपस्थित बीसीसीएल के तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र एवं सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी

सीएसआर के तहत आर.बी.बी. उच्च विद्यालय, राजगंज में निर्माण कार्य

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड द्वारा सीएसआर कार्यों के अंतर्गत **आर.बी.बी. उच्च विद्यालय, राजगंज** में लगभग एक करोड़ की लागत से एक सभागार, दो कक्षा कक्ष, एक छात्र-सदन, साइकिल स्टैंड तथा बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक शौचालय कॉम्प्लेक्स का निर्माण कार्य किया गया। यह निर्माण कार्य फरवरी 2020 में संपन्न हुआ तथा 30 मई 2020 को तत्कालीन अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री पी एम प्रसाद द्वारा इस संपूर्ण परियोजना को अंतिम रूप से विद्यालय के प्रधानाध्यापक को सौंप दिया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के अलावा तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्रा, महाप्रबंधक (सीएसआर) श्रीमती आहुति स्वाईं तथा सीएसआर विभाग के अन्य सभी अधिकारी उपस्थित थे।

प्रमुख उच्च स्तरीय बैठकों का आयोजन

समन्वय समिति

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के मुख्यालय कोयला भवन में दिनांक 01.04.2020 को समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबन्ध निदेशक श्री पी.एम. प्रसाद द्वारा की गयी। बैठक में तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (वित्त) श्री समीरण दत्ता तथा सभी क्षेत्रों एवं मुख्यालय के विभागों के महाप्रबंधक और विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे। बैठक में सुरक्षा मानकों को अपनाते हुए स्वच्छ कोयला उत्पादन, उत्पादकता, कोयला प्रेषण जैसे अनेक मुद्दों पर चर्चा की गयी। इस बैठक में कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए सभी सुरक्षा उपायों को ध्यान में रखा गया।

केन्द्रीय सलाहकार समिति

कंपनी की केन्द्रीय सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 02.05.2020 को अध्यक्ष-सह-प्रबन्ध निदेशक श्री पी एम प्रसाद की अध्यक्षता में कोयला भवन मुख्यालय में आयोजित की गयी। बैठक में कोविड-19 महामारी को ध्यान में रखते हुए कंपनी में कोयले के उत्पादन, प्रेषण एवं कंपनी की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने संबंधी अनेक मुद्दों पर चर्चा की गयी साथ ही साथ केंद्रीय अस्पताल को कोविड अस्पताल के रूप परिवर्तित होने के उपरांत कोरोना पीड़ितों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने और वर्तमान महामारी के दौर में सीएसआर के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा तय करने जैसे अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गयी। बैठक में तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबन्ध निदेशक श्री पी एम प्रसाद, निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र, निदेशक (तकनीकी) श्री राकेश कुमार तथा निदेशक (वित्त) श्री समीरन दत्ता के अलावा समिति के सदस्य श्री एस के बक्शी, श्री बच्चा सिंह, श्री के पी गुप्ता, श्री सिद्धार्थ गौतम, श्री अर्जुन सिंह, श्री आर तिवारी आदि वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से उपस्थित रहे।

कल्याण परिषद

कोयला भवन मुख्यालय में दिनांक 13.05.2020 को बीसीसीएल कल्याण परिषद की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी. एम. प्रसाद द्वारा की गयी। उपरोक्त बैठक में कल्याण परिषद के सदस्यों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, पेय जल तथा वर्तमान में कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थिति से निपटने संबंधी आदि विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गयी। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के अलावा उक्त बैठक में प्रबंधन की ओर से तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र, महाप्रबंधक (कार्मिक / कल्याण एवं सीएसआर) श्रीमति आहुति स्वाईं, महाप्रबंधक (का. एवं औ. सं.) श्री ए के दुबे, चिकित्सा सेवाएं प्रमुख डॉ० ए के गुप्ता आदि था। कल्याण परिषद के सदस्यों में श्री के के करण, श्री जे एन सिंह धर्मपुरी, श्री महेंद्र सिंह, श्री अर्जुन सिंह, श्री निताई महतो एवं श्री अशोक कुमार साव आदि वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित रहे।

सुरक्षा समिति

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की कोयला खदानों में सुरक्षा के उचित मानकों को अपनाने एवं कोयला खदानों में कार्यरत श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और वर्तमान महामारी कोविड-19 से सुरक्षा एवं बचाव संबंधी अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के उद्देश्य से दिनांक 20.05.2020 को तत्कालीन अध्यक्ष-सह-प्रबंधक निदेशक श्री पी एम प्रसाद की अध्यक्षता में कंपनी स्तरीय द्विपक्षीय सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में प्रबंधन की ओर से तत्कालीन निदेशक (कार्मिक) श्री आर एस महापात्र, निदेशक तकनीकी (संचालन) श्री राकेश कुमार,निदेशक तकनीकी (योजना एवं परियोजना) श्री चंचल गोस्वामी, निदेशक (वित्त) श्री समीरण दत्ता, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के तकनीकी सचिव श्री अरूण कुमार, महाप्रबंधक (सुरक्षा) श्री ए के सिंह एवं सभी क्षेत्रों के महाप्रबंधक तथा सुरक्षा परिषद के सदस्यों में श्री आर0 पी0 सिंह, विनोद मिश्रा, श्री के पी गुप्ता, श्री आर के तिवारी,श्री ए एम पाल,एवं श्री गोपाल मिश्रा आदि विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित रहे।

कोविड-19 के उपचार के लिए
बीसीसीएल केंद्रीय चिकित्सालय, धनबाद की तैयारी

- भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के केंद्रीय अस्पताल धनबाद को COVID-19 रोगियों के उपचार के चिह्नित किया गया है।

- पृथक रूप से इलाज (आइसोलेशन) के लिए 100 बेड की व्यवस्था की गई है। 50 बेड कोरंटाइन के लिए आरक्षित किए गये हैं। 7 आईसीयू बेड की भी व्यवस्था की गयी है।

- कोविड-19 के मरीजों के आपातकालीन उपयोग हेतु 7 वेंटिलेटर तैयार रखे गए हैं।

- फ्रंटलाइन हेल्थकेयर पेशेवरों के लिए हजारों पीपीई किट की व्यवस्था की गयी है।

- 70 से अधिक ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की गई है।

- स्थिति पर लगातार नजर रखने के लिए एक समर्पित टास्क फोर्स का गठन किया गया है। एंबुलेंस और वार्ड की नियमित साफ-सफाई तथा सैनिटाइजेशन के साथ ही पृथक वार्डों (आइसोलेशन) में प्रवेश एवं निकास के लिए अलग-अलग दरवाजों की व्यवस्था की गई है।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
एक मिनीरत्न कंपनी
(कोल इण्डिया लिमिटेड का एक अंग)
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद – 826005

हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा